Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ   نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ   وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly
BADAR Qadian
HINDI

वर्ष- 8
अंक-42-47

मूल्य
600 रुपए
वार्षिक

संपादक
शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

08 जमादिउल अव्वल 1445 हिज्री कमरी, 23 नबुव्वत 1402 हिज्री शम्सी, 23 नवम्बर 2023 ई.

अल्लाह तआला का आदेश

قَالَ هٰذَا رَحۡمَۃٌ مِّنۡ رَّبِّیۡ
فَاِذَا جَآءَ وَعۡدُ رَبِّیۡ جَعَلَہٗ دَکَّآءَ ۚ وَکَانَ وَعۡدُ رَبِّیۡ حَقًّا

(सूरः बनी ईसराइल : 106)

अनुवाद : उसने कहा कि यह मेरे रब की रहमत है अतः जब मेरे रब वादा आएगा तो वह उसे टुकड़े-टुकड़े कर देगा और बेशक मेरे रब का वादा सच्चा है।

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़ज़ल नाज़िल करता रहे। आमीन

खुदा के पैदा किए हुए जीवों के प्रति करुणा आस्था एक ऐसी वस्तु है जो ईमान का दूसरा भाग है जिसके बिना ईमान पूर्ण और दृढ़ नहीं होता।

दौलत की कोई विशेषता प्राप्तनहीं है, जो कुछअल्लाह तआला ने किसी को दिया है वह अल्लाह की राह में खर्च करना चाहिए, उद्देश्य इस से यह है कि इंसान अपने साथी इंसानों का हमदर्द और मददगार बने

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वाणी

रास्ते का हक

(2465) हज़रत बू सईद (रज़ियल्लाहु अन्हो) ने नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से रिवायत की है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : देखना सड़कों पर मत बैठना। सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा : हमारे पास कोई विकल्प नहीं है। वे हमारे बैठने के स्थान हैं जहां हम एक-दूसरे से संवाद करते हैं। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, अगर उन्हें बैठने का स्थान बनाना है तो फिर रास्ते को जो उसका अधिकार है दो। उन्होंने पूछा : रास्ते का अधिकार क्या है? आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : आँखें नीची रखना और कष्ट देने वाली वस्तुओं को दूर करना और सलाम का उत्तर देना, जो अच्छी बात है उसका आदेश देना और जो अप्रिय है उससे रोकना।

प्यासे जानवर को पानी पिलाने का सवाब

(2466) हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हो के हवाले से बताया गया है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : एक बार एक व्यक्ति सड़क पर चल रहा था और उसे बहुत प्यास लगी। उसे एक कुआँ मिला। उसमें उतर कर पानी पिया। फिर जब वह बाहर गया तो उसने देखा कि एक कुत्ता प्यास के कारण हांफ रहा है और मिट्टी चाट रहा है। आदमी ने सोचा कि जैसे मैं प्यासा था, वैसे ही कुत्ता भी प्यास से पीड़ित है। वह कुएं के पास गया और अपने मोज़े में पानी भर कर कुत्ते को पानी पिलाया। अल्लाह ने उसके अच्छे काम की सराहना की और उसके पापों को छुपाते हुए उसे माफ़ कर दिया। सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा, हे अल्लाह के रसूल! और हमें इन बेजुबान मवेशियों के कारण भी इनाम मिलेगा? आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम : हर जीवित प्राणी के कारण सवाब दिया जाएगा।

(सही बुखारी, भाग 4, किताब अल्-मज़ालिम, 2008 कादियान में प्रकाशित)

★ ★ ★

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का उपदेश

अल्लाह के मार्ग मे खर्च करने का महत्व

मैं फिर मुख्य मुद्दे पर आता हूं और कहता हूं कि अमीर और धनी लोग धर्म की अच्छी सेवा कर सकते हैं। इसीलिए सर्वशक्तिमान अल्लाह ने مِمَّا رَزَقۡنٰہُمۡ یُنۡفِقُوۡنَ (अल् बकरः : 4) मुत्तकियों की सिफ़त का एक हिस्सा कहा है। यहां दौलत की कोई विशेषता नहीं है, अल्लाह ने किसी को जो भी दिया है उसे अल्लाह की राह में खर्च करना चाहिए। इसका उद्देश्य यह है कि मनुष्य अपनी तरह का सहानुभूतिशील और समर्थक बने। अल्लाह का क़ानून दो ही चीज़ों पर निर्भर करता है। तज़ीम अमरुल्लाह और शफ़क़त अलल् ख़ल्कुल्लाह अतः مِمَّا رَزَقۡنٰہُمۡ یُنۡفِقُوۡنَ में, शफ़क़त अलल् ख़ल्कुल्लाह की शिक्षा है। धनवान लोगों को धार्मिक सेवाओं के बेहतरीन अवसर मिलते जाते हैं। एक बार हमारे नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने रुपयों की ज़रूरत बताई तो हज़रत अबू बकर घर की सारी संपत्ति लेकर आ गए। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने पूछा अबू बकर! घर में क्या छोड़ आए हो तो उन्हों ने उत्तर में कहा अल्लाह और और उसके रसूल का नाम छोड़ दिया है।" हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो उसमें से आधा ले आए। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उमर से पूछा! घर पर क्या छोड़ा आए हो, तो उत्तर दिया कि आधा। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि, अबू बकर और उमर के कार्यों के बीच का अंतर उनके मर्तबों में अंतर है। इस संसार में मनुष्य को धन-दौलत बहुत प्यारी होती है, इसीलिए दर्शन शास्त्र में लिखा है कि यदि कोई व्यक्ति यह देखे कि उसने अपना कलेजा निकाल कर किसी को दे दिया है, तो इसका अर्थ है धन। यही कारण है कि उन्होंने सच्ची भक्ति और विश्वास प्राप्त करने के लिए कहा : لَنۡ تَنَالُوا الۡبِرَّ حَتّٰی تُنۡفِقُوۡا مِمَّا تُحِبُّوۡنَ (अले-इमरान : 93) जब तक आप सबसे प्रिय चीज़ खर्च नहीं करते, तब तक आपको हकीकी नेकी नहीं पा सकोगे। क्योंकि अल्लाह के लोगों के प्रति करुणा और व्यवहार का एक बड़ा हिस्सा धन खर्च करने की आवश्यकता बताता है और अल्लाह के पैदा किए हुओं से हमदर्दी एक ऐसी वस्तु है जो ईमान का दूसरा भाग है जिसके बिना ईमान पूर्ण और दृढ़ नहीं है। जब तक कोई व्यक्ति त्याग नहीं करेगा, वह दूसरों का लाभ कैसे पुहचा सकता है। दूसरों की भलाई और करुणा के लिए आत्म-बलिदान आवश्यक है, और इस आयत لَنۡ تَنَالُوا الۡبِرَّ حَتّٰی تُنۡفِقُوۡا مِمَّا تُحِبُّوۡنَ में इसी कुर्बानी की तालीम और आदेश दिया गया है।

अतः माल् का अल्लाह तआला की राह में माल खर्च करना भी इंसान की खुशी और परहेज़गारी का एक मानक और पैमाना है। अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के जीवन में अल्लाह के वक्फ़ का मानक और परीक्षण वह था जिसे अल्लाह के रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्ल ने एक आवश्यकता के रूप में वर्णित किया था और वह समस्त संपत्ति के साथ आए थे।

(परिशिष्ट, खंड I, पृष्ठ 497, प्रकाशित 2018 कादियान)

★ ★ ★

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

ख़ुत्बः जुमअः

इस समय मैं एक ऐसे व्यक्तित्व का वर्णन करने लगा हूँ जिसने अपनी ज़िंदगी अल्लाह तआला की प्रसन्नता के अनुसार गुज़ारने की कोशिश की

यह वर्णन है श्रीमती अमतुल कुद्दूस साहिबा का जो हज़रत डाक्टर मीर मुहम्मद इस्माईल साहब रज़ियल्लाहु अन्हु की पुत्री और साहिबज़ादा मिर्ज़ा वसीम अहमद साहिब मरहूम की पत्नी थीं

ख़ुश-क़िस्मत होते हैं वे लोग जिनकी केवल नेक यादें होती हैं, जो लोगों के लिए लाभदायक होते हैं, जो दीन को दुनिया पर मुक़द्दम करने का वास्तविक उदाहरण होते हैं, जो अल्लाह और उसके रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हुक्मों पर अमल करने की कोशिश करने वाले होते हैं,

जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत का हक़ अदा करने की कोशिश करने वाले होते हैं, जो ख़िलाफ़त-ए-अहमदिया से हक़ीक़ी वफ़ा रखने वाले होते हैं, जो हुक़ूक़ुल् -'इबाद (मनुष्यों के आपसी अधिकार) की अदायगी की जहां तक संभव हो कोशिश करने वाले होते हैं, जो अल्लाह तआला की रज़ा हासिल करने की प्रत्येक समय कोशिश करने वाले होते हैं, जिनके लिए प्रत्येक के मुख से केवल तारीफ़ी के शब्द ही निकलते हैं और यूं आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के इरशाद के मुताबिक़ उन पर जन्नत वाजिब हो जाती है

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने उनको जब कादियान भिजवाया तो ये भी नसीहत फ़रमाई थी कि लजना की जमाअतों को इकट्ठा करना है। आप वहां जाते ही पहले जनरल सैक्रेटरी कादियान बनें फिर 1955 ई. में सदर लजना स्थानीय और फिर सदर लजना भारत निर्वाचित हुईं।
59 ई. में लजना मुक़ामी की सदारत के लिए किसी और का निर्वाचन हुआ और आप सदर लजना भारत के तौर पर काम करती रहीं।

अल्लाह के फ़ज़्ल से 1999 ई. तक इस ख़िदमत पर निर्धारि रहीं। इसके बाद एज़ाज़ी मैंबर रहीं। अपने ख़िदमत के समय के दौरान हिन्दुस्तान की मजालिस के दौरे भी किए, उनकी ख़िदमात का अरसा छयालीस वर्ष बनता है

विनम्रता और कामिल वफ़ा से जिस तरह उन्होंने ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हु से वफ़ा का इज़हार किया था वे ताल्लुक़ जारी रहा और मुझ से भी वही ताल्लुक़ क़ायम रहा। यह एक मिसाल है।

अल्लाह तआला उनके दर्जात बुलंद फ़रमाए और उनकी औलाद को भी उनकी नेकियां जारी रखने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

कादियान के लोगों को जिस मुहब्बत से उन्होंने रखा है अल्लाह तआला उन्हें तौफ़ीक़ दे कि वे आपस में भी इसी प्रेम से रहें।

साहबज़ादी सय्यदा अमतुल कुद्दूस साहिबा पुत्री हज़रत डाक्टर मीर मुहम्मद इस्माईल साहब रज़ियल्लाहु अन्हु, पत्नी साहिबज़ादा मिर्ज़ा वसीम अहमद साहिब की विशेषतों का वर्णन और नमाज़-ए-जनाज़ा ग़ायब

श्रीमान मुहम्मद अरशद अहमदी साहिब (यू.के) और श्रीमान अहमद जमाल साहिब (अमरीका) की वफ़ात पर उनकी विशेषतों का वर्णन और नमाज़-ए-जनाज़ा ग़ायब

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़,
दिनांक 15 सितंबर 2023 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُلِلّٰهِ
رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ
وَلَاالضَّآلِّيْنَ

यह अल्लाह तआला का क़ानून है कि जो इन्सान भी इस दुनियामें आया उसने एक समय गुज़ार कर इस दुनिया से विदा होना है लेकिन ख़ुश-क़िस्मत होते हैं वे लोग जिनकी केवल नेक यादें होती हैं, जो लोगों के लिए लाभदायक होते हैं, जो दीन को दुनिया पर मुक़द्दम करने का अमली नमूना होते हैं, जो अल्लाह और उस के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हुक्मों पर अमल करने की कोशिश करने वाले होते हैं, जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत का हक़ अदा करने की कोशिश करने वाले होते हैं, जो ख़िलाफ़त-ए-अहमदिया से हक़ीक़ी वफ़ा रखने वाले होते हैं, जो हुक़ूक़ुल् -'इबाद (मनुष्यों के आपसी अधिकार) की अदायगी की जहां तक संभव हो कोशिश करने वाले होते हैं, जो अल्लाह तआला की रज़ा हासिल करने की प्रत्येक समय कोशिश करने वाले होते हैं, जिनके लिए प्रत्येक ज़बान से केवल प्रशंसा के शब्द ही निकलते हैं और यूं आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के इरशाद के मुताबिक़ उन पर जन्नत वाजिब हो जाती है।

(सही अल् बुख़ारी किताब الجنائز باب ثناء الناس علی المیت हदीस : 1367)

इस समय मैं एक ऐसे व्यक्तित्व का वर्णन करने लगा हूँ जिसने अपनी ज़िंदगी अल्लाह तआला की रज़ा के मुताबिक़ गुज़ारने की कोशिश की। यह वर्णन है।

श्रीमती अमतुल कुद्दूस साहिबा का जो हज़रत डाक्टर मीर मुहम्मद इस्माईल साहब रज़ियल्लाहु अन्हु की पुत्री और साहिबज़ादा मिर्ज़ा वसीम अहमद साहिब मरहूम की पत्नी थीं।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु की बहू थीं। यह रहती तो कादियान में थीं लेकिन कुछ समय से रब्वाह मेंअपनी बेटियों के पास आई हुई थीं। रब्वाह में पिछले दिनों, छयानवे वर्ष की आयु में बक़ज़ाए इलाही उनकी वफ़ात हो गई। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से 9/1 की मूसिया थीं। उनकी

शेष पृष्ठ 08 पर

ख़ुत्बः जुमअः

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने जिन वाक़ियात की भविष्यवाणी की है उनमें से एक साफ़ और स्पष्ट और महान विजय रुम की भविष्यवाणी थी

बदर की जंग के साथ रूमी सलतनत की फ़तह का भी एक ताल्लुक़ है

जब ये आयत नाज़िल हुई तो यह मक्के की बात है, मक्का के जो मुशरेकीन थे, पसंद करते थे कि अहल-ए-फ़ारस अहल-ए-रुम पर ग़ालिब आ जाएं क्योंकि ये और वे बुत परस्त थे। .. जबकि मुस्लमान पसंद करते थे कि अहल-ए-रुम अहल-ए-फ़ारस पर ग़ालिब आ जाएं इसलिए कि वे अहले-किताब थे

अरब के नबी उम्मी की भविष्यवाणी शब्द शब्द पूरी हुई और ठीक उस समय जब मुस्लमानों ने बदर के मैदान में क़ुरैश को शिकस्त दी रोमियों ने ईरानियों पर ग़लबा हासिल किया। मुशरेक़ीन मक़बूज़ात का एक एक शहर वापस ले लिया और ईरानियों को ताकत के साथ नील के किनारों से हटा कर फिर दज्ला फुरात के साहिलों की ओर धकेल दिया

इस ज़माने के बारे में क़ुरआन-ए-करीम में जो भविष्यवाणियाँ हैं उन्हें भी देखना चाहिए। माता पिता ख़ुद भी क़ुरआन-ए-करीम पढ़ें और अपने बच्चों को भी ये भविष्यवाणियाँ दिखाएंगे कि किस तरह ये इस्लाम की सच्चाई पर एक दलील हैं। इस्लाम की सच्चाई के सबूत तो हज़ारों हैं। अतः माता पिता को भी और नौजवानों को भी अपने इलम को बढ़ाने की ज़रूरत है।

इस भविष्यवाणी की ख़ूबी यह है कि अगर आग़ाज़-ए-शिकस्त से आग़ाज़-ए-फ़तह तक जोड़ें तो भी नौ वर्ष होते हैं और अगर अंजाम-ए- -शिकस्त से आग़ाज़-ए-फ़तह तक जोड़ें तो भी वही नौ वर्ष होंगे

ग़ज़्व-ए-बदर और ग़लब-ए-रुम की भविष्यवाणी का बाहमी ताल्लुक़ और सूरः रूम में वर्णन की गई अज़ीमुश्शान भविष्यवाणी के बारे में ईमान अफ़रोज़ तफ़सीली वर्णन

श्रीमान फ़रास अली अब्दुल वाहिद साहिब यू.के की वफ़ात पर उनकी विशेषताओं का वर्णन और नमाज़-ए-जनाज़ा ग़ायब

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 22 सितंबर 2023 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُلِلّٰهِ
رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّا كَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ
وَلَاالضَّآلِّيْنَ

कुछ समय पहले ग़ज़्व-ए-बदर के दौरान आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के इस ग़ज़्वे के संबंध में वाक़ियात वर्णन किए थे। बदर के हवाले से ही बाअज़ मुताल्लिक़ा बातें और वाक़ियात प्रस्तुत करूँगा। उनका तारीख़ में वर्णन है और जानना भी ज़रूरी है। जैसा कि पहले ख़ुतबात में वर्णन हो चुका है

नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम तीन रोज़ तक मैदान-ए-बदर में मुक़ीम रहे तीसरे रोज़ आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने सवारियों के कुजा वे कसने का इरशाद फ़रमाया। मैदान-ए-बदर से ही आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाह रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत ज़ैद बिन हारिसा रज़ियल्लाहु अन्हो को मदीना की जानिब बदर की फ़तह की ख़ुशख़बरी का पैग़ाम देते हुए भेजा। फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने मदीना की तरफ़ वापसी का सफ़र किया।

इस फ़त्ह प्राप्त करने वाले क़ाफ़िले के साथ क़ुरैश-ए-मक्का के सत्तर क़ैदी भी थे।

(अल् सीरतुल हल्बिया भाग 2 पृष्ठ 420-425, 426 बाब ग़ज़्व-ए-बदर अल् कुबरा, दारुल मरूफ़ बेरुत)

(सही अल् बुख़ारी किताब अल्मग़ाज़ी हदीस नंबर 3986)

कुतुब-ए-तारीख़ में वर्णित है कि रास्ते में ही उनमें से दो क़ैदियों को उनके संगीन जंगी जरायम के तहत उस समय के आम दस्तूर के मुताबिक़ क़तल कर दिया गया था जिनमें से एक नज़र बिन हारिस और दूसरा उक़्बा बिन अबी मुईत था। लेकिन उस पर सब तारीख़ दानों का सहयोग नहीं है।

अल्लामा इब्ने इसहाक कहते हैं कि बदर से वापसी पर जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम सफ़रा के स्थान पर पहुंचे तो नज़र बिन हारिस को क़तल किया गया और हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो ने उसे क़तल किया था।

(अल् सीरतुल नब्विया लेइब्ने हशाम पृष्ठ 438 दारुल कुतुब इल्मिया बेरुत 2001 ई.)

सीरत हल्बिया में वर्णित है कि नज़र हालत-ए-क़ैद में था कि उसने अपने साथी से कहा अल्लाह की क़सम मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम मुझे क़तल करने वाला है क्योंकि उसने मुझे ऐसी नज़र से देखा है जिस में मुझे मौत नज़र आई है। उस शख़्स ने नज़र से कहा अल्लाह की क़सम ऐसा केवल रोब की वजह से है। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का जो रोब तुम पर पड़ा है उस की वजह से तुम्हें लग रहा है। तो नज़र ने मसअब बिन अमीर से कहा हे मसअब उस शख़्स की निसबत तुम रहमी रिश्तेदारी में मेरे ज़्यादा क़रीब हो। अतः तुम अपने साथी से बात करो कि वह मुझे क़ैदियों में एक शख़्स बना दे। अल्लाह की क़सम वह मुझे क़तल करने वाला है तो इस पर मसअब ने कहा तुम अल्लाह की किताब के बारे में अमुक और अमुक बात कहा करते थे और तुम नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के बारे में यह और ये कहा करते थे और तुम आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो को ईज़ा और तकलीफ़ दिया करते थे। (अलसीरतुल हल्बिया भाग 2 पृष्ठ 429-430 बाब ग़ज़्व-ए-बदर अल् कुबरा, दारुल-मारफ़ा बेरुत) तो यह पुरानी बातें तुम्हारे साथ हैं। अगर तुम क़तल हो रहे हो तो इस जुर्म में हो सकता है हो रहे हो

एक रिवायत में आता है कि नज़र बिन हारिस की बहन कुतेला हारिसा की पुत्री ने अपने भाई की मौत पर कुछ पंक्तियाँ कविता की कहीं। बाअज़ के नज़दीक यह उस की पुत्री ने कहे थे और बाद में उसने इस्लाम क़बूल कर लिया था। जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को इन अशआर का इलम हुआ तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम बहुत ज़्यादा रोय यहां तक कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की दाढ़ी गीली हो गई।

आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया अगर ये अशआर मुझे इस अर्थात नज़र बिन हारिस के क़तल से पहले पहुंचते तो मैं इस पर एहसान करते हुए उस को माफ़ कर देता।

(अल् सीरतुल हल्बिया भाग 2 पृष्ठ 430 बाब ग़ज़्व-ए-बदर अल्कुबरा, दारुल मारफ़ा बेरूत)

(अल् सीरतुल नबविया लेइब्ने हशाम पृष्ठ 510-511 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत)

लेकिन कुछ सीरत निगार इस तरह के अशआर और उन पर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के रोने की रिवायत का खंडन करते हैं। कुछ तो वाक़े की तरदीद करते हैं। बहरहाल अल्लाह तआला बेहतर जानता है कि क्या सही है। अगर वाक़ई ये वाक़िया हुआ है तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के नर्म-दिल से ये इज़हार बईद नहीं है। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम बहुत नर्म-दल वाले हुए थे। रहम आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के दिल में था। इसी तरह नज़र बिन हारिस के बारे में यह भी रिवायत आती है कि वे क़तल नहीं हुआ जैसा कि मैं ने कहा बल्कि ज़िंदा रहा था और ग़ज़्व-ए-हुनैन में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ शामिल हुआ था और नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उसे सौ ऊंट उपहार के रूप में होसल बढ़ाने के लिए लिए थे।

(शरह ज़रक़ानी على المواهب اللدنية भाग 1 पृष्ठ 482 दारुल कुतुब इल्मिया)

फिर मैदान-ए-बदर से वापसी पर दूसरे क़तल का जो वर्णन तारीख़ में आता है वह उक़्बा बिन अबी मुईत था। उस को मदीने के रास्ते में इरक ज़बिया स्थान पर क़तल किया गया था। हज़रत आसिम बिन साबित अंसारी रज़ियल्लाहु अन्हो ने उक़्बा को क़तल किया और एक रिवायत के मुताबिक़ हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो ने उसे क़तल किया।

(अलसीरतुल नबविया लेइब्ने हशाम पृष्ठ 438-439 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत)

एक मुसन्निफ़ लिखता है कि नज़र बिन हारिस और उक़्बा बिन अबी मुईत दोनों इस्लाम के ख़िलाफ़ जंग की आग भड़काने वालों में से थे और मुस्लमानों पर मसायब-ओ-आलाम के पहाड़ तोड़ने वालों के सरग़ना थे। (اللؤلؤ المكنون सीरत इन्साईकलोपीडीया भाग 5 पृष्ठ 490-491मकतबा दारुस्सलाम) इसलिए उनको ये सज़ा मिली।

बहरहाल इन दोनों क़तल होने वालों के बारे में ख़ुलासा यह है कि दोनों के बारे में हतमी तौर पर नहीं कहा जा सकता कि वाक़ई इन दोनों क़ैदियों को रास्ते में क़तल किया भी गया था कि नहीं क्योंकि बाअज़ ऐसी रिवायात भी हैं जिन में बड़ी वज़ाहत से यह मौजूद है कि उक़्बा बिन अबी मुईत बदर के मैदान में ही क़तल हो गया था।

(अल् सीरत अल्नब्विया लेइब्ने हशाम पृष्ठ 477 दारुल कुतुब इल्मिया 2001 ई.)

जबकि नज़र बिन हारिस के बारे में दोनों तरह की रिवायात हैं। इस के क़तल किए जाने की भी और यह भी कि क़तल नहीं हुआ था बल्कि बाद में ज़िंदा रहा और ग़ज़्व-ए-हुनैन के अवसर पर इस्लाम क़बूल कर लिया था जबकि यह रिवायात किसी कदर कमज़ोर समझी जाती हैं।

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हु ने सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम में बदर के क़ैदियों में से क़तल होने वाले इन दोनों का जो वर्णन किया है वह इस तरह है कि "कुछ इतिहासकारों ने क़ैद होने वाले सरदारों में उक़्बा बिन अबी मुईत का नाम भी वर्णन किया है और लिखा है कि वे बाद में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के हुक्म के अधीन हालत-ए-क़ैद में क़तल कर दिया गया था परंतु यह दुरुस्त नहीं है। हदीस और तारीख़ में निहायत सराहत के साथ ये रिवायत आती है कि उक़्बा बिन अबी मुईत मैदान-ए-जंग में क़तल था।" जंग के दौरान हुआ था, क़ैदी नहीं बना था। " और उन मक्का के सरदारों में से था जिनकी लाशें एक गढ़े में दफ़न की गई थीं जबकि नुज़र बिन हारिस का हालत-ए--क़ैद में क़तल किया जाना अक्सर रिवायात से ज़ाहिर होता है और इसके क़तल की वजह यह थी कि वे उन लोगों में से था जो बेगुनाह मुस्लमानों के क़तल के बराह-ए--रस्त ज़िम्मादार थे जो मक्का में कुफ़्फ़ार के हाथ से मारे गए थे। और अग़लब यह है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के रबीब हारिस बिन अबी हाला जो इस्लाम के आरंभ में निहायत ज़ालिमाना तौर पर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की आँखों के सामने क़तल किए गए थे, उनके क़तल करने वालों में नज़र बिन हारिस भी शामिल था। लेकिन यह यक़ीनी है कि नज़र के सिवा कोई क़ैदी क़तल नहीं किया गया और न ही इस्लाम में केवल दुश्मन होने और जंग में ख़िलाफ़ हिस्सा लेने की वजह से क़ैदियों के क़तल करने का दस्तूर था इसलिए उस के मुताल्लिक़ बाद में एक निर्धारत हुक्म भी क़ुरआन शरीफ़ में नाज़िल हुआ। यह भी याद रखना चाहीए कि जबकि बहुत सी रिवायात में नज़र बिन हारिस के क़तल किए जाने का वर्णन आता है लेकिन कुछ ऐसी रिवायतें भी पाई जाती हैं जिनसे यह साबित होता है कि वे क़तल नहीं किया गया था बल्कि बदर के बाद मुद्दत तक ज़िंदा रहा और अंततः ग़ज़्व-ए-हुनैन के अवसर पर मुस्लमान हो कर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के हल्क़ा-बगोशों में शामिल हो गया था परंतु मुक़द्दम अल् ज़िकर' अर्थात पहली " रिवायात के मुक़ाबला में ये रिवायतें उमूमन कमज़ोर समझी गईहैं। वल्लाहो आलम।

बहरहाल अगर क़ैदियों में से कोई शख़्स क़तल किया गया तो वह केवल नज़र बिन हारिस था जो क़िसास में क़तल किया गया था और इसके मुताल्लिक़ भी यह रिवायत आती है कि जब उसके क़तल के बाद आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उसकी बहन के वह दर्दनाक अशआर सुने जिनमें आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से रहम की अपील की गई थी तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि अगर ये अशआर मुझे पहले पहुंच जाते तो मैं नज़र को माफ़ कर देता। बहरहाल नज़र के सिवा कोई क़ैदी क़तल नहीं किया गया।"

(सीरत ख़ातम नबिय्यीन हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हु एम.ए पृष्ठ 366-367)

ये जो हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हु का नतीजा है यह उन्होंने तारीख़ी कुतुब से अख़ज़ किया किया।

ग़ज़्व-ए-बदर में मुशरेकीन के बड़े बड़े सरदारों समेत सत्तर कुफ़्फ़ार मुस्लमानों के हाथों मारे गए और सत्तर ही मुस्लमानों के हाथों क़ैदी हुए। क़ैदियों की संख्या के हवाले से उनचास और चोहत्तर की संख्या के अक़्वाल भी मिलते हैं, बाअज़ रिवायतें हैं लेकिन मशहूर और दुरुस्त सत्तर काफ़िरों का गिरफ़्तार होना ही है।

(उद्धृत दायरा मआरिफ़ सीरत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भाग 6 पृष्ठ 245 दारुल मारुफ लाहौर)

तारीख़ के मुख़्तलिफ़ कुतुब में ये सत्तर ही लिखा है। सही बुख़ारी में एक रिवायत में मज़कूर है कि

नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो ने बदर के दिन मुशरिकों के एक सौ चालीस आदमियों का नुक़्सान किया था अर्थात सत्तर क़ैदी और सत्तर मकतूल थे।

(सही अल् बुख़ारी किताब अल् मग़ाज़ी हदीस नंबर : 3986)

मुशरेकीन के क़ैदी जो जंग-ए-बदर के बाद इस्लाम में शामिल हुए उन्हों ने इस्लाम क़बूल किया, उनके बारे में लिखा है कि सहाबा कराम रज़ियल्लाहु अन्हो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के हुक्म की तामील करते हुए असीरान-ए-बदर से बहुत हुस्न-ए-सलूक से पेश आते थे। इन क़ैदियों में कुछ ख़ुशनसीब ऐसे थे जो इस्लाम की तालीमात और सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हो के अख़लाक़-ए-आलीया से प्रभावित हो कर मुस्लमान हो गए। उनमें से बाज़ के असमा गरामी उन्होंने तफ़सील से लिखे भी हैं। अब्बास बिन अब्दुल मुतलिब, अक़ील बिन अबूतालिब, नौफ़ल बिन हारिस, अबुल्आस बिन रबी, अब्बू अज़ीज़ उनका नाम ज़ुरार बिन अमीर अबद था सायब बिन अबू हुबेश, ख़ालिद बिन हशशांम मख़्ज़ूमी, अब्दुल्लाह बिन अबू साइब, मुतलिब बिन हनतब अबू वदा सहमी, अब्दुल्लाह बिन उबय् बिन खिलफ हजमी, वहब् बिन उमैर वहब, सुहेल बिन अम्र व आमरी, अब्दुल्लाह बिन ज़ामा जो उम्मुल मोमनीन हज़रत सौदा बिंत ज़मा रज़ियल्लाहु अन्हा के भाई थे। क़ैस बन सायब और निसतास जो उमय्या बिन खलफ का गुलाम था। साइब बिन उबैद। इन सब ने बदर के दिन अपना फ़िद्या अदा कर के इस्लाम क़बूल कर लिया था।

(सब्-लुल् हुदा वर्-रुषाद सीरत ख़ैरुल उबाद भाग 4 भाग 78-79 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 1993 ई.)

बदर की जंग के साथ रूमी सलतनत की फ़तह का भी एक ताल्लुक़ है।

रूमी सलतनत की फ़तह के ही विषय में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की भविष्यवाणी थी और इस का ताल्लुक़ जैसा कि मैं ने कहा जंग-ए-बदर से भी है इसलिए यहां उस का वर्णन भी मुनासिब है। नबुव्वत के पांचवें वर्ष में सूरः रुम नाज़िल हुई जिसमें रूमी सलतनत के ग़लबे की बाबत भविष्यवाणी की गई थी।

(دلائل النبوة للبيهقى का भाग 7 पृष्ठ 143 बाब वर्णन ذكر السور التى نزلت بمكة... दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 1988 ई.)

(सीरत अल्नबवी (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) अज़ अल्लामा शिबली नुमानी भाग 2 हिस्सा सोम पृष्ठ 315 इदारा इस्लामियात सितंबर 2002 ई.)

इसकी तफ़सील तो मैं आगे वर्णन करूँगा। जब अल्लाह तआला ने सूरः अल् रुम की इबतेदाई आयात नाज़िल फ़रमाई तो हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु

मक्के के अतराफ़ में इस सूरत की इन आयात को पढ़ते हुए ऐलान करने लगे कि अल الٓمّٓ ۔ غُلِبَتِ الرُّوۡمُ ۔ فِیۡۤ اَدۡنَی الۡاَرۡضِ وَہُمۡ مِّنۡۢ بَعۡدِ غَلَبِہِمۡ سَیَغۡلِبُوۡنَ ۔ فِیۡ بِضۡعِ سِنِیۡنَ (अल् रोम : 2 से 5) अर्थात : अहले रुम मग़लूब किए गए क़रीब की ज़मीन में और वे अपने मग़लूब होने के बाद फिर ज़रूर ग़ालिब आ जाऐंगे तीन से नौ वर्ष के अर्से तक

जब ये आयत नाज़िल हुई तो यह मक्के की बात है, मक्का के जो मुशरेकीन थे पसंद करते थे कि अहले फ़ारस अहले रुम पर ग़ालिब आ जाएं क्योंकि ये और वे बुतपरस्त थे।

फ़ारस के लोग, ईरानी लोग बुतपरस्त थे, आग की इबादत करते थे और मक्के के लोग भी बुतपरस्त थे। वे पसंद करते थे कि फ़ारस के लोग ग़ालिब जाएं और मुस्लमान पसंद करते थे कि अहल-ए-रुम अहल-ए-फ़ारस पर ग़ालिब आ जाएं इसलिए कि वे अहल-ए-किताब थे।

उन्होंने उसका वर्णन हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो से किया और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से इस का वर्णन किया तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया वे ज़रूर ग़ालिब आ जाऐंगे अर्थात रूमी ग़ालिब आ जाऐंगे। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने इस का वर्णन मुशरेकीन से किया तो उन्होंने कहा कि हमारे दरमयान और अपने दरमयान एक मुद्दत निर्धारत कर लो अर्थात शर्त रख लो। अगर हम ग़ालिब आ गए तो हमारे लिए यह और यह होगा और अगर तुम ग़ालिब आ गए तो तुम्हारे लिए यह और यह होगा तो उन्होंने पाँच वर्ष की मुद्दत रखी। एक रिवायत के मुताबिक़ छः वर्ष की मुद्दत रखी। शरह सुन्न अल् तिरमज़ी तोहफ़् अल् होज़ी में लिखा है कि रुम के फ़ारस पर ग़लबे के दिन मोमिन ख़ुश हुए और उन्हें इस बात का इलम बदर के दिन हुआ जब जिबराईल अलैहिस्सलाम उस ग़लबे की ख़बर के साथ उनकी अर्थात मुशरेकीन के ख़िलाफ़ बदर में उनकी मदद की ख़ुशख़बरी लेकर नाज़िल हुए थे। (तहफ़् अल् होज़ी शरह सुंन अल् तिरमेज़ी भाग 2 पृष्ठ 2169- मकतबा बैतुल अफ़ाका अल् दोलिया) (सुंन अल् तिरमेज़ी अबवाब तफ़सीर अल-क़ुरआन बाब वमिन सूरत अले रूम हदीस : 3194) यह ताल्लुक़ है बदर के साथ उसका कि जिस दिन बदर की फ़तह हुई है उसी दिन रोमियों की फ़तह की भी ख़ुशख़बरी मिली सही बुख़ारी की एक रिवायत है, इस की शरह में अल्लामा बदरुद्दीन एनी रहमहुल्लाह ग़लब-ए-रुम वाली भविष्यवाणी का वर्णन करते हुए लिखते हैं कि जब अहल-ए-फ़ारस और अहल-ए-रुम के दरमयान जंग हुई तो मुस्लमान अहल-ए-फ़ारस पर अहल-ए-रुम की फ़तह को पसंद करते थे क्योंकि वे अहल-ए-किताब थे। अहल-ए-रुम के साथ मुस्लमानों की हमदर्दी इसलिए थी कि अहल-ए-रुम अहल-ए-किताब थे जबकि कुफ़्फ़ार क़ुरैश अहल-ए-फ़ारस की फ़तह को पसंद करते थे क्योंकि वे मजूसी थे और कुफ़्फ़ार-ए-क़ुरैश भी बुतों की इबादत करते थे। अतः इस बात पर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो और अबु जहल के दरमयान शर्त लग गई तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि वहां कुछ लफ़्ज़ है और बिज़ तो नौ बरस या सात बरस पर इतलाक़ पाता है। अतः मुद्दत को बढ़ा दो। फिर उन्होंने ऐसा ही किया। अतः अहल-ए-रुम ग़ालिब आ गए।

अल्लाह तआला ने फ़रमाया: الٓمّٓ ۔ غُلِبَتِ الرُّوۡمُ ۔ فِیۡۤ اَدۡنَی الۡاَرۡضِ وَہُمۡ مِّنۡۢ بَعۡدِ غَلَبِہِمۡ سَیَغۡلِبُوۡنَ ۔ فِیۡ بِضۡعِ سِنِیۡنَ ۬ؕ لِلّٰہِ الۡاَمۡرُ مِنۡ قَبۡلُ وَمِنۡۢ بَعۡدُ ؕ وَیَوۡمَئِذٍ یَّفۡرَحُ الۡمُؤۡمِنُوۡنَ ۔ بِنَصۡرِ اللّٰہِ (अल् रोम 2 से 6) अनुवाद यह है। اَنَا اللّٰہُ اَعۡلَمُ الٓمّٓ ۔ अर्थात में अल्लाह सबसे ज़्यादा जानने वाला हूँ। अहले रुम मग़लूब किए गए क़रीब की ज़मीन में और वे अपने मग़लूब होने के बाद फिर ज़रूर ग़ालिब आ जाऐंगे। तीन से नौ वर्ष के अर्से तक। हुक्म अल्लाह ही का चलता है पहले भी और बाद में भी और इस दिन मोमिन भी अपनी फ़ुतूहात से बहुत ख़ुश होंगे जो अल्लाह की नुसरत से होगी। और शोबी कहते हैं कि उस समय शर्त लगाना हलाल था।

(उद्धृत उम्दतुल् कारी शरह सही अल् बुख़ारी भाग 7 पृष्ठ 29 दारुल फिकर बेरूत)

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने जिन वाक़ियात की भविष्यवाणी की है उनमें से एक साफ़ और सरीह और मारकतुल आरा ग़लबा-ए-रुम की थी।

अरब के दोनों कोनों में रुम और फ़ारस की हुकूमतें क़ायम थीं। इस समय ईरान का ताजदार ख़ुसरो और रुम का फ़रमांरवा हरक़्ल था। इन दोनों सल्तनतों में एक मुद्दत से युद्ध झगड़ों का सिलसिला क़ायम था। बेअसत नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पांचवें साल 614 ई. में इन दोनों हमसाया सल्तनतों में एक ख़ूँरेज़ जंग शुरू हो गई। जबकि इन दोनों क़ौमों में किसी क़ौम ने मज़हब-ए-इस्लाम क़बूल नहीं किया ताहम रूमी हज़रत ईसा के पैरौ और अहल-ए-किताब थे और ईरानियों के अक़ायद मुशरेकीन मक्का के अक़ायद के साथ मुताबिक़त रखते थे इसलिए लाज़िमी तौर पर मुस्लमानों को रूमी ईसाइयों के साथ और मुशरेकीन मक्का को ईरानियों के साथ हमदर्दी थी। इसलिए मुस्लमानों और कुफ़्फ़ार-ए-क़ुरैश दोनों को जंग के नतीजा का शिद्दत के साथ इंतेज़ार था। इन दोनों सल्तनतों के हदूद दरिया-ए-दजला और फ़ुरात के किनारों पर आकर मिलते थे। रूमी सलतनत मशरिक़ में एशिया को चक हदूद इराक़, शाम, फ़लस्तीन और मिस्र में फैली हुई थी। ईरानियों ने दो तरफ़ा हमला किया। एक तरफ़ तो वह दजला और फ़ुरात के किनारे से शाम की तरफ़ बढ़े और दूसरी तरफ़ एशया कोचक की जानिब आज़र बाईजान से आरमीनिया हो कर मौजूदा अनातूलिया में दाख़िल हो गए और दोनों तरफ़ से रोमियों को पीछे हटाते हटाते समुंद्र में उनको धकेल दिया। शाम की सिम्त में उन्होंने यू.के बाद दीगरे उस अर्ज़-ए-मुक़द्दस का एक एक शहर रोमियों से लिया। 614 ई. में फ़लस्तीन और इस का मुक़द्दस शहर यरोशलम ईरानियों के ज़ेर-ए-साया आ गया। कनीसों को मिस्मार कर दिया गया। मज़हबी निशानों की तौहीन की गई। शहनशाह-ए-ईरान के कसर-ए-इक़ामत की तीस हज़ार मक़्तूल सरों से सजावट की गई, क़तल कर के उनके सिर महल में रखे गए। ईरानी फ़ुतूहात का सेलाब इस से आगे बढ़ कर 616 ई. में पूरी वादेई नील अर्थात मिस्र की हकूमत पर मुहीत हो गया और आख़िर सिकंदरिया के साहिल पर जा कर थमा और दूसरी तरफ़ तमाम एशिया कोचक को ज़ेरोज़बर करता हुआ बासफ़ोर्स के साहिल पर जा कर रुका और क़ुस्तुनतुनिया की दीवारों से जा टकराया। शहनशाह-ए-रुम के दारुल सलतनत के सामने ईरान के फ़ातिह लश्कर ने जा कर अपने ख़ेमे खड़े कर दिए और अब रोमियों के बजाय इराक़-ओ-शाम और फ़लस्तीन और मिस्र और एशया कोचक के वसीअ इलाक़ों में ईरानी हुकूमत क़ायम हो गई। प्रत्येक जगह आतिश कदे तामीर हुए और मसीह के बजाय आग और सूरज की जबरी प्रसतिश को रिवाज दिया गया। रूमी सलतनत की इस तबाही को देखकर रूमी शहनशाह की वसीअ ममलेकत में बग़ावतें खड़ी हो गईं। अफ़्रीक़ा में भी शोरिश हुई। ख़ुद क़ुस्तुनतुनिया के क़रीब यूरोप में मुख़्तलिफ़ क़ौमें क़तल-ओ-ग़ारतगरी में मसरूफ़ हो गईं। ग़रज़ उस समय सलतनत रूमा के पुर्ज़े पुर्ज़े उड़ गए थे।

जंग का नतीजा जब ऐसा खिलाफ़-ए-उम्मीद ज़ाहिर हुआ तो मुस्लमानों को यक़ीनन-ए-रंज और कुफ़्फ़ार को मुसर्रत हासिल हुई और उन्होंने मुस्लमानों को ताना दिया कि जिस तरह हमारे भाई ग़ालिब हुए हैं उसी तरह अगर तुम हमसे लड़ते तो हम भी ग़ालिब होते। इस बात से ये ज़ाहिर होता है कि काफ़िरों ने कहा हम मुस्लमानों पर ग़ालिब हो जाऐंगे। इस समय रोमियों की जो अफ़सोसनाक हालत थी वह तो जैसा हमने देखा बहुत बुरी हालत थी। वे अपने मशरिक़ी मक़बूज़ात का एक एक चप्पा खो चुके थे। ख़ज़ाना ख़ाली था। फ़ौज मुंतशिर थी। मुल्क में बग़ावतें पैदा थीं। शहनशाह-ए-रुम हरक़्ल हमा-तन अय्याश, बेपर्वा, सुस्त और मुब्तलाए औहाम था। ऐसा बड़ा बादशाह था जो किसी क़ाबिल नहीं था। ईरानियों का फ़ातेह सिपहसालार क़ुस्तुनतुनिया के दरवाज़े पर पहुंच कर रोमियों के सामने हसब-ए-ज़ेल शरायत पेश करता है कि रूमी बाज अदा करें। एक हज़ार टालंट सोना, एक हज़ार टालंट चांदी, (टालंट क़दीम यूनानी पैमाना है जो आजकल के तक़रीबन तेईस किलो ग्राम वज़न के बराबर है) एक हज़ार रेशम के थान, एक हज़ार घोड़े और एक हज़ार कुँवारी लड़कियां ईरानियों के हवाले करें।

रोमियों की कमज़ोरी की यह हालत थी कि उन्होंने इन शर्मनाक शरायत को क़बूल कर लिया। इस पर भी जब रूमी क़ासिद शहनशाह-ए-ईरान के दरबार में मुसालहत का पैग़ाम लेकर गया तो मग़रूर ख़ुसरो ने जो जवाब दिया वह यह था ठीक है तुमने क़बूल कर लिया लेकिन मुझ को यह नहीं, जो चीज़ें ये ले के आया है यह नहीं, बल्कि ख़ुद हरक़्ल ज़ंजीरों में बंधा हुआ मेरे तख़्त के नीचे चाहिए। बादशाह रुम जो है वह मेरे तख़्त के नीचे मुझे चाहिए और इस समय तक सुलह नहीं करूँगा जब तक शहनशाह-ए-रुम अपने मस्लूब ख़ुदा को छोड़कर सूरज देवता के आगे सिर न झुकाएगा। ईसाइयत से तौबा नहीं करेगा। तो लिखने वाले ने लिखा है कि कारज़ार-ए-आलम का यह नक़्शा था कि मार्क-ए-जंग से बहुत दूर एक ख़ुशक और बंजर ज़मीन की सुनसान पहाड़ी से एक शहज़ाद-ए-अमन नमूदार हुआ और सांसारिक घटनाओं के बिल्कुल ख़िलाफ़ ये भविष्यवाणी फ़रमाई जिसकी आयतें में आगे पढ़ूँगा और जो क़ुरआन शरीफ़ है। अतः ये तफ़सील मैंने इसलिए वर्णन की है कि भविष्यवाणी की जो शान है इस का पता लगे।

यह भविष्यवाणी क्या थी जैसा कि मैं ने पहले भी पढ़ा। दुबारा पढ़ता हूँ الٓمّٓ ۔ غُلِبَتِ الرُّوۡمُ ۔ فِیۡۤ اَدۡنَی الۡاَرۡضِ وَہُمۡ مِّنۡۢ بَعۡدِ غَلَبِہِمۡ سَیَغۡلِبُوۡنَ ۔ فِیۡ بِضۡعِ سِنِیۡنَ ۬ؕ لِلّٰہِ الۡاَمۡرُ مِنۡ قَبۡلُ وَمِنۡۢ بَعۡدُ ؕ وَیَوۡمَئِذٍ یَّفۡرَحُ الۡمُؤۡمِنُوۡنَ ۔ بِنَصۡرِ اللّٰہِ ؕ یَنۡصُرُ مَنۡ یَّشَآءُ ؕ وَہُوَ الۡعَزِیۡزُ الرَّحِیۡمُ ۔ وَعۡدَ اللّٰہِ ؕ لَا یُخۡلِفُ اللّٰہُ وَعۡدَہٗ (अल् रुम : 2 से 7)

मैं अल्लाह सबसे ज़्यादा जानने वाला हूँ। अहले रुम मग़लूब किए गए क़रीब की ज़मीन में और वे अपने मग़लूब होने के बाद फिर ज़रूर ग़ालिब आ जाऐंगे। तीन से नौ वर्ष के अर्से तक। हुक्म अल्लाह ही का चलता है पहले भी और बाद में भी और इस दिन मोमिन भी अपनी फ़ुतूहात से बहुत ख़ुश होंगे जो अल्लाह की नुसरत से होगी। वह नुसरत करता है जिसको चाहता है और वह कामिल ग़लबा वाला और बार-बार रहम करने वाला है। यह अल्लाह का वादा है और अल्लाह अपने वादे के ख़िलाफ़ नहीं करता।

लिखने वाले ने लिखा है कि यह भविष्यवाणी वाक़ियात के लिहाज़ से इस क़दर दुःसाध्य और नाक़ाबिल-ए-यक़ीन थी अर्थात यह बहुत दुर की बात लगती थी कि कुफ़्फ़ार ने इस के सही होने की सूरत में कई ऊंटों के हारने की मुस्लमानों से शर्त लगाई। अब मुस्लमानों और काफ़िरों को बड़ी शिद्दत से वाक़ियात के पहलू का इंतेज़ार था। आख़िर चंद वर्ष बाद दुनिया ने खिलाफ़-ए-उम्मीद पल्टा खाया। तारीख़-ए-ज़वाल-ए-रुम का मशहूर मुसन्निफ़ और इतिहासकार गबन (Gibbon) हरक़्ल के अहवाल वर्णन करते हुए लिखता है कि "शहनशाह जो अपनी इबतेदाई और आख़िरी ज़िंदगी में मस्ती, अय्याशी और औहाम का ग़ुलाम और रियाया के मसायब का नामर्द तमाशाई था। जिस तरह सुबह-ओ-शाम का कहर आफ़ताब नसफ़ अल्नहार की रोशनी से फुट जाता है दफ़ा 621 ई. में महलों का आरकाडेविस (Arcadius) मैदान-ए-जंग का सीज़र (Caesar) बन गया। अर्थात यही शहनशाह-ए-रुम जो था और रुम व हरक़ल की इज़्ज़त छः मुहिम्मात के ज़रीया निहायत शानदार तरीक़े से बचा ली गई।

उन्होंने आरकाडेविस की जो मिसाल दी है यह रूमी सलतनत का एक बादशाह था जिसका ज़माना 408 क़बल मसीह और 378 क़बल मसीह तक है। बड़ा मज़बूत था। इसी तरह सीज़र भी एक पुराना फ़ौजी जरनैल था।

बहरहाल जिस समय हरक़्ल अपनी बक़ीया फ़ौज लेकर क़ुस्तुनतुनिया से चला लोगों को मालूम होता था कि अज़ीम रुम के आख़िरी लश्कर का मंज़र दुनिया के सामने है लेकिन अरब के नबी उम्मी की भविष्यवाणी शब्द शब्द पूरी हुई और ऐन उस समय जब मुस्लमानों ने बदर के मैदान में क़ुरैश को शिकस्त दी रोमियों ने ईरानियों पर ग़लबा हासिल किया। मशरेक़ी मक़बूज़ात का एक एक शहर वापस ले लिया और ईरानियों को बाज़फ़ुर्स और नील के किनारों से हटा कर फिर दजला और फ़ुरात के साहिलों की तरफ़ दिया।

इस अज़ीमुश्शान भविष्यवाणी की सदाक़त के असर ने दुनिया को आश्चर्य में डाल दिया। क़ुरैश के बहुत से लोग इस सदाक़त को देखकर मुस्लमान हो गए और जो ग़ैर हैं वे इस भविष्यवाणी के क़ायल हो रहे हैं। इस हैरतनाक भविष्यवाणी की सच्चाई से मुतहय्यर हो कर वाक़िया के साढ़े बारा सौ बरस के बाद ऐडवर्ड गबन कहता है, जिसका अनुवाद यह है कि "मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) मशरिक़ की दो अज़ीमुश्शान सल्तनतों के डांडे पर बैठ कर इन दोनों की एक दुसरे को तबाह कर देने वाली रोज़-अफ़्ज़ूँ कोशिशों की तरक़्क़ी को दिल्ली मुसर्रत के साथ बग़ौर अध्यन कर रहा था और ऐन उस समय जबकि ईरानियों को पैहम कामयाबियां हासिल हो रही थीं उसने इस भविष्यवाणी की जुर्रत की कि चंद वर्ष में फ़तह-ओ-ज़फ़र रूमी इल्म पर साया-फ़गन होगी। जिस समय यह भविष्यवाणी की गई थी कोई भविष्यवाणी इस से ज़्यादा दूर अज़ क़ियास नहीं हो सकती थी। यह यक़ीन ही कोई नहीं कर सकता था क्योंकि हरक़्ल की बारह वर्ष की हुकूमत ने इस बात का ऐलान कर दिया था कि रूमी शहनशाही का शीराज़ा जलद बिखर जाएगा।

हरक़्ल की तबीयत में इस फ़ौरी इन्क़लाब और वाक़ियात की दृष्टि से इस हैरतनाक तग़य्युर और इसके अस्बाब की तफ़सील में तारीख़-ए-रुम के मुसन्निफ़ीन ने अजीब अजीब बातें पैदा की हैं लेकिन उन्हें क्या मालूम, ये बात अल्लामा शिबली नुमानी अपनी किताब सीरतुन्नबी(सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) में लिखते हैं कि उन्हें क्या मालूम कि इस ख़ूनी मार्के से दूर एक पैग़ंबराना हाथ रोमियों की मदद के लिए दराज़ था और वही इस इन्क़िलाब और तग़य्युर का सबसे बड़ा रुहानी सबब था। मस्तदरक और जामे तिरमेज़ी में है कि रुम और फ़ारस की जंग जब शुरू हुई तो मुशरेकीन ईरानियों के तरफ़दार थे क्योंकि वे भी बुतपरस्त थे और मुस्लमान रोमियों के तरफ़दार थे क्योंकि वे अहल-ए-किताब थे। इस समय ईरानी रुम को दबाते जा रहे थे, इस पर सूरः रूम की भविष्यवाणी नाज़िल हुई। हज़रत अबूबकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने चिल्ला चिल्ला कर तमाम मुशरेकीन को यह भविष्यवाणी सुनाई। मुशरेकीन ने कहा कि इस भविष्यवाणी के लिए कोई वर्ष मुक़र्रर करो। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने पाँच वर्ष की शर्त की। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को मालूम हुआ तो फ़रमाया कि बिज़आ सिन्नी का शब्द तीन से नौ तक बोला जाता है। इसलिए दस वर्ष से कम की मुद्दत मुक़र्रर करनी चाहिए थी। इसलिए इस तशरीह के मुताबिक़ नौवीं वर्ष ग़ज़्व-ए-बदर के मौक़ा पर भविष्यवाणी पूरी हुई और रूमी ग़ालिब आ गए।

कुछ नौजवान और जवानी में क़दम रखने वाले बच्चे भी पूछते हैं, कई ख़त लिखते हैं, पिछले हफ़्ते भी बाअज़ आए कि

हमें किस तरह पता चले कि इस्लाम सच्चा मज़हब है और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ही सच्चे नबी हैं, बाक़ी नहीं

यहां के माहौल ने उन पर यह असर डालना शुरू कर दिया है कि उनको इस्लाम की सच्चाई के बारे में शक पड़ना शुरू हो गया है। उन्हें इस तारीख़ और ग़ैरों के इस इज़्हार से यक़ीन कर लेना चाहिए और फिर इस ज़माने के बारे में क़ुरआन-ए-करीम में जो भविष्यवाणियाँ हैं उन्हें भी देखना चाहिए। माता पिता ख़ुद भी क़ुरआन-ए--करीम पढ़ें और अपने बच्चों को भी ये भविष्यवाणियाँ दिखाएंगे कि किस तरह ये इस्लाम की सच्चाई पर एक दलील हैं। इस्लाम की सच्चाई के सबूत तो हज़ारों हैं। अतः माता पिता को भी और नौजवानों को भी अपने इलम को बढ़ाने की ज़रूरत है।

सिर्फ सवाल कर देना काफ़ी नहीं है अगर सवाल करना है तो ख़ुद इलम हासिल करने की कोशिश करें और इसी तरह जो हमारी तंज़ीमें हैं, उनको भी इस बारे में भी उनको इलम देना चाहिए।

यह सवाल कई दफ़ा मुझसे पूछा गया है। बहरहाल यह वज़ाहत ज़रूरी थी इसलिए मैं ने यहां वर्णन कर दिया। अब असल मज़मून की तरफ़ आता हूँ।

ग़ज़्व-ए-बदर हिज्रत के पहले वर्ष और बेअसत के चौधवीं वर्ष पेश आया था। इस से नौ वर्ष पहले आने का पांचवां वर्ष होगा। इस बिना पर भविष्यवाणी का ज़माना पाँच बेसत और इस के पूरे होने का युग चौदह बेअसत या एक हिज्री है। बाअज़ लोगों ने इस भविष्यवाणी के पूरा होने का ज़माना सुलह हुदैबिया का वर्ष अर्थात छः हिज्री वर्णन किया है। यह सही नहीं है। शायद लोगों को इस से धोखा हुआ है कि सही बुख़ारी वग़ैरा में है कि क़ासिद-ए-नब्वी जब इस्लाम का दावतनामा लेकर क़ैसर के पास गया तो उस समय वह क़ैसर फ़तह का शुक्रिया अदा करने के लिए शाम आया हुआ था और मालूम है कि क़ासिद सुलह हुदैबिया के ज़माने में रवाना हुए थे इसलिए लोगों ने यह समझा कि हुसूल-ए-फ़तह की भी यही तारीख़ है मगर यह गलती लगी है और बिल्कुल है कि फ़तह की तारीख़ नहीं बल्कि फ़तह के जश्न की तारीख़ है।

इस समय वह जश्न मनाने के लिए आया हुआ था। बहरहाल तारीख़ के मुताबिक़त से यह बात साबित है कि 609 ई. में आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की बेअसत हुई। 610 ई. से रुम और फ़ारस की छेड़-छाड़ शुरू हुई। 613 ई. में ऐलान-ए-जंग हुआ। 614 ई. से रोमियों की शिकस्त का आग़ाज़ हुआ। 616 ई. में रूमी शिकस्त तकमील को पहुंच गई। 622 ई. से फिर रोमियों ने हमला शुरू किया। 623 ई. से उनकी कामयाबी का आग़ाज़ हुआ और 625 ई. में उनकी फ़तह तकमील को पहुंच गई। इस तर्तीब से देखें तो ज़ाहिर होगा कि इस भविष्यवाणी की ख़ूबी यह है कि अगर आग़ाज़-ए-शिकस्त से आग़ाज़-ए-फ़तह तक जोड़ें तो भी नौ वर्ष होते हैं और अगर अंजाम-ए-शिकस्त से आग़ाज़ फ़तह तक जोड़ें तो भी वही नौ बरस होंगे।

इस फ़तह की तकमील के बाद हरक़्ल फिर वही सुस्त और अय्याश क़ैसर बन गया जो पहले था। ऐसा मालूम होता था कि दस्त-ए-क़ुदरत ने केवल इस भविष्यवाणी के पूरा करने के लिए चंद वर्ष के वास्ते उसके दिल-ओ-दिमाग़ को बेदार किया और दस्त-ओ-बाज़ू को होशयार कर दिया। भविष्यवाणी की तकमील के बाद फिर पहले की तरह तईश और काहिल ने उस को ऐश-ओ-ग़फ़लत के बिस्तर पर सुला दिया।

(उद्धृत सीरतुन्नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अज़ अल्लामा शिबली नुमानी भाग 2 हिस्सा सोम पृष्ठ 313 से 316 इदारा इस्लामियात सितंबर 2002 ई.)

(इन्साईक्लो पीडीया बिर्टीनीका भाग 2 पृष्ठ 341)(इन्साईक्लो पीडीया बर्टीनीका भाग 4 पृष्ठ 938)

ये सारा भी अल्लामा शिबली नामानी ने अपनी तारीख़ में लिखा है

रोमियों की फ़तह के बारे में बाअज़ जगह तारीख़ का जो मतभेद है उसे हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस तरह हल किया है कि "बाअज़ रिवायात में यह मर्वी हुआ है कि फ़तह रुम सुलह हुदैबिया के ज़माना में हासिल हुई थी परंतु ये दोनों रिवायतें मुतज़ाद नहीं हैं क्योंकि दरअसल रुम की फ़तह का ज़माना जंग-ए-बदर से लेकर सुलह हुदैबिया के ज़माना तक फैला हुआ था।"

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अज़ हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हु एम. ए पृष्ठ 377)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु इस बारे में फ़रमाते हैं कि "आप सल्ल-

ल्लाहो अलैहि व सल्लम अभी मक्का में ही थे कि अरब में यह ख़बर मशहूर हुई कि ईरानियों ने रोमियों को शिकस्त दे दी है। इस पर मुक्का वाले बहुत ख़ुश हुए कि हम भी मुशरिक हैं और ईरानी भी मुशरिक। ईरानियों का रोमियों को शिकस्त दे देना एक नेक शगून है और इस के अर्थ ये हैं कि मक्का वाले भी मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर ग़ालिब आ जाएंगे परंतु मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को ख़ुदा ने बताया कि غُلِبَتِ الرُّوۡمُ ۙ فِیۡۤ اَدۡنَی الۡاَرۡضِ وَ هُمۡ مِّنۡۢ بَعۡدِ غَلَبِهِمۡ سَیَغۡلِبُوۡنَ ۙ فِیۡ بِضۡعِ سِنِیۡنَ (रूम : 3 से 5) रूमी हुकूमत को शाम के इलाक़ा में बे-शक शिकस्त हुई है लेकिन इस शिकस्त को तुम क़तई न समझो। मग़लूब होने के बाद रूमी फिर 9 वर्ष के अंदर ग़ालिब आजाऐंगे। इस भविष्यवाणी के शाय होने पर मक्का वालों ने बड़े-बड़े क़हक़हे लगाए यहां तक कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो से बाअज़ कुफ़्फ़ार ने सौ-सौ ऊंट की शर्त बाँधी कि अगर इतनी शिकस्त खाने के बाद भी रुम तरक़्क़ी कर जाए तो हम तुम्हें सौ ऊंट देंगे और अगर ऐसा न हुआ तो तुम हमें सौ ऊंट देना। बज़ाहिर उस भविष्यवाणी के पूरा होने का इमकान दूर से दूर तर होता चला जा रहा था। शाम की शिकस्त के बाद रूमी लश्कर नियमित कई शिकस्तें खाकर पीछे हटता गया यहां तक कि ईरानी फ़ौजें बहीरा मार मोरा (MARMARA SEA) के किनारों तक पहुंच गईं। क़ुस्तुन्तुनिया अपनी एशियाई हुकूमतों से बिल्कुल मुनक़ते हो गया और रुम की ज़बरदस्त हुकूमत एक रियासत बन कर रह गई परंतु ख़ुदा का कलाम पूरा होना था और पूरा हुआ।

इंतेहाई मायूसी की हालत में रुम के बादशाह ने अपने सिपाहियों समेत आख़िरी हमला के लिए क़ुस्तुनतुनिया से ख़ुरूज किया और एशियाई साहिल पर उतर कर ईरानियों से एक फ़ैसलाकुन जंग की तरह डाली। रूमी सिपाही बावजूद संख्या और सामान में कम होने के क़ुरआन-ए-करीम की भविष्यवाणी के मुताबिक़ ईरानियों पर ग़ालिब आए। ईरानी लश्कर ऐसा भागा कि ईरान की सरहदों से वरे उसका क़दम कहीं भी न ठहरा और फिर दुबारा रूमी हुकूमत के अफ़्रीक़ी और एशियाई मफ़्तूहा देश उसके क़बज़ा मे आ गए।"

(दीबाचा तफ़सीरुल-क़ुरआन, अनवार उलूम भाग 20 पृष्ठ 445)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं "जब अबू बकर सिद्दीक़ रज़िय-ल्लाहु अन्हो ने अबू जहल से शर्त लगाई और क़ुरआन शरीफ़ की वह भविष्यवाणी शर्त का आधार रखी कि

الٓمّٓ ۚ غُلِبَتِ الرُّوۡمُ ۙ فِیۡۤ اَدۡنَی الۡاَرۡضِ وَ هُمۡ مِّنۡۢ بَعۡدِ غَلَبِهِمۡ سَیَغۡلِبُوۡنَ ۙ فِیۡ بِضۡعِ سِنِیۡنَ

(रुम 2 से 5) और तीन बरस का अरसा ठहराया तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम भविष्यवाणी की सूरत को देखकर फ़ील-फ़ौर दूर-अंदेशी को काम में लाए और शर्त की किसी क़दर बदलाव करने के लिए अबूबकर सिद्दीक़ को हुक्म फ़रमाया और फ़रमाया कि बिज़आ सिन्नी का शब्द मुजमल है और अक्सर नौ बरस तक इतलाक़ पाता है।"

(इज़ाला औहाम, रुहानी ख़ज़ायन भाग 3 पृष्ठ 310-311)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम मज़ीद फ़रमाते हैं कि

"आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के ज़माना में ईरानी लोग मुशरिक थे और केसर-ए-रुम जो कि ईसाई था दरअसल मोहिद था" और यह भी एक वजह है मुस्लमानों की मिलने की। आप फ़रमाते हैं कि क़ैसर-ए-रुम जो ईसाई था दरअसल एक ख़ुदा की इबादत करने वाला था "और मसीह को ख़ुदा का पुत्र नहीं मानता था और जब उस के सामने मसीह का वह वर्णन जो क़ुरआन में दर्ज है पेश किया गया तो उसने कहा कि मेरे नज़दीक मसीह का दर्जा इस से ज़र्रा भी ज़्यादा नहीं जो क़ुरआन ने बतलाया है। हदीस में भी इस की गवाही बुख़ारी में मौजूद है कि मैं गवाही देता हूँ कि यह वही कलाम है जो कि तौरेत में है और इस की हैसियत नबुव्वत से बढ़कर नहीं है। इसी पर यह आयत नाज़िल हुई कि الٓمّٓ ۚ غُلِبَتِ الرُّوۡمُ ۙ فِیۡۤ اَدۡنَی الۡاَرۡضِ وَ هُمۡ مِّنۡۢ بَعۡدِ غَلَبِهِمۡ سَیَغۡلِبُوۡنَ ۙ فِیۡ بِضۡعِ سِنِیۡنَ (अल् रूम : 2 से 5) अर्थात रुम अब मग़लूब हो गया है परंतु थोड़े अरसा में 9 वर्ष में फिर ग़ालिब होगा। ईसाई लोग निहायत शरारत से कहते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने दोनों ताक़तों का अंदाज़ा कर लिया था और फिर फ़िरासत से यह भविष्यवाणी कर दी थी। हम कहते हैं कि इसी तरह मसीह भी बिमारों को देखकर अंदाज़ा कर लिया करता था जो अच्छे होने के काबिल नज़र आते थे उनका सल्ब-ए-अमराज़ कर देता।" यहां फिर मुवाज़ना कर रहे हैं और फिर आप ने असल में उनके एतराज़ का जवाब दिया है। "इस तरह तो सारे मोजज़ात उनके हाथ से जाते हैं। يَوۡمَئِذٍ يَّفۡرَحُ الۡمُؤۡمِنُوۡنَ उस दिन मोमिनों को दो ख़ुशियां होंगी एक तो जंग-ए-बदर की फ़तह दूसरे रुम वाली भविष्यवाणी के पूरा होने की।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 3 पृष्ठ 298-299 ऐडीशन 2022 ई.)

अगर यह एतराज़ है कि जंग को देख लिया था तो जंग-ए-बदर में तो हालात ऐसे नहीं थे। इस की फ़तह की ख़ुशख़बरी भी तो साथ ही थी और ये दोनों ख़ुशख़बरियाँ इकट्ठी मिलीं।

मज़ीद फ़रमाते हैं कि "क़ुरआन-ए-शरीफ़ बहुत सी भविष्यवाणियों से भरा पड़ा है जैसा कि रुम और ईरान की सलतनत की निसबत एक ज़बरदस्त भविष्यवाणी क़ुरआन शरीफ़ में है।

और यह उस समय की भविष्यवाणी है जबकि मजूसी सलतनत ने एक लड़ाई में रूमी सलतनत पर फ़तह पाई थी और कुछ ज़मीन उनके मलिक की अपने क़बज़ा में कर ली थी तब मुशरेकीन-ए-मक्का ने फ़ारसियों की फ़तह अपने लिए एक नेक फ़ाल समझी थी और इस से यह समझा था कि चूँकि फ़ारसी सलतनत मख़लूक़ परस्ती में हमारे शरीक है ऐसा ही हम भी इस नबी का इस्तीसाल करेंगे जिसकी शरीयत अहल--ए-किताब से मुशाबहत रखती है। तब ख़ुदा तआला ने क़ुरआन शरीफ़ में यह भवि-ष्यवाणी नाज़िल फ़रमाई कि आख़िर कार रूमी सलतनत की फ़तह होगी और चूँकि रुम की फ़तह की निसबत यह भविष्यवाणी है इस लिए इस सूरत का नाम सूरः अल् रूम रखा गया है और चूँकि अरब के मुशरिकों ने मजूसियों की सल्तनत की फ़तह को अपनी फ़तह के लिए एक निशान समझ लिया था इस लिए ख़ुदा तआला ने इस भविष्यवाणी में यह भी फ़र्मा दिया कि जिस रोज़ फिर रुम की फ़तह होगी उस रोज़ मुस्लमान भी मुशरिकों पर फ़तहयाब होंगे। इसलिए ऐसा ही ज़हूर आया।

इस बारे में क़ुरआन शरीफ़ की आयत ये है। الٓمّٓ ۚ غُلِبَتِ الرُّوۡمُ ۙ فِیۡۤ اَدۡنَی الۡاَرۡضِ وَ هُمۡ مِّنۡۢ بَعۡدِ غَلَبِهِمۡ سَیَغۡلِبُوۡنَ ۙ فِیۡ بِضۡعِ سِنِیۡنَ अल् रूम : 2 से 5) (अनुवाद) मैं ख़ुदा हूँ जो सबसे बेहतर जानता हूँ। रूमी सलतनत बहुत क़रीब, ज़मीन में मग़लूब हो गई है और वह लोग फिर नौ वर्ष तक तीन वर्ष के बाद मजूसी सलतनत पर ग़ालिब हो जाऐंगे उस दिन मोमिनों के लिए भी एक ख़ुशी का दिन होगा। इसलिए ऐसा ही हुआ। और तीन वर्ष के बाद नौ वर्ष के अंदर फिर रूमी सलतनत ईरानी सल्तनत पर ग़ालिब आगई और इसी दिन मुस्लमानों ने भी मुशरिकों पर फ़तह पाई क्योंकि वह दिन बदर की लड़ाई का दिन था जिस में अहले इस्लाम को फ़तह हुई थी।"

(चशमा मार्फ़त, रुहानी ख़ज़ायन भाग 23 पृष्ठ 320)

फिर फ़रमाया "अब ग़ौर करके देखो कि यह कैसी हैरत-अंगेज़ और जलीलुल्-क़दर भविष्यवाणी है

ऐसे समय में यह भविष्यवाणी की गई जब मुस्लमानों की कमज़ोर और ज़ईफ़ हालत ख़ुद ख़तरा में थी। न कोई सामान था न ताक़त थी। ऐसी हालत में मुख़ालिफ़ कहते थे कि यह गिरोह बहुत जल्द नेस्त-ओ-नाबूद हो जाएगा। मुद्दत की क़ैद भी इस में लगा दी और يَوۡمَئِذٍ يَّفۡرَحُ الۡمُؤۡمِنُوۡنَ कह कर दोहरी भविष्यवाणी बनादी अर्थात जिस रोज़ रूमी फ़ारसियों पर ग़ालिब आएँगे उसी दिन मुस्लमान भी बा-मुराद हो कर ख़ुश होंगे। इसलिए जिस तरह पर यह भविष्यवाणी की थी इसी तरह बदर के रोज़ यह पूरी हो गई। उधर रूमी ग़ालिब आए और इधर मुस्लमानों को फ़तह हुई।"

(मल् फ़ूज़ात भाग 2 पृष्ठ 387 ऐडीशन 2022 ई.)

बहरहाल यह सिलसिला अभी चलेगा। ये वाक़ियात जो आँहज़रत सल्ल-ल्लाहो अलैहि व सल्लम के हवाले से हैं। बाक़ी इन शा अल्लाह आइन्दा वर्णन करूँगा। नमाज़ के बाद मैं एक जनाज़ा ग़ायब भी पढ़ाऊंगा श्रीमान फ़रास अली अब्दुल वाहिद साहिब (यू.के) का है। यह पिछले दिनों सैंतालीस वर्ष की उम्र में बक़ज़ाए इलाही वफ़ात पा गए। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। यह इराक़ी नस्ल के थे और 2012 ई. में बैअत करके जमात में शामिल हुए थे। पीछे रहहने वालों में पत्नी और एक पुत्री शामिल हैं। क़ुरआन-ए-करीम भी उन्होंने हिफ़्ज़ कर लिया था। बचपन में ही किया हुआ था। बड़े हुए तो हिंसात्मक दीनी राह इख़्तेयार करते हुए बहुत कट्टर किस्म के मुस्लमान हो गए थे। उन्होंने घर का टीवी भी बेच दिया कि यह देखना हराम है। सब तस्वीरें घर की फाड़ दीं कि ये भी हराम हैं। एक अच्छे आर्टिस्ट थे। अर्थात जब किसी मौलवी के तहत रह के दीन का इलम हासिल किया तो ही fanatic हो गए और प्रत्येक किस्म की तस्वीरें बनाने से भी किनारा-कशी इख़्तेयार करली। लेकिन उनके दिल में शकूक थे कि पता नहीं मैं सही हूँ कि नहीं। इस्लाम सच्चा है कि नहीं? एक ईसाई क्लास फ़ैलो उनका दोस्त था। कुछ अर्से के बाद इस से प्रभावित हो गए और इस्लाम के बारे में जो शकूक थे और जो सवालात थे उनके जवाबात न मिलने की वजह से फिर ये ईसाई हो गए। फिर कुछ अरसा के बाद नबी करीम सल्ल-ल्लाहो अलैहि व सल्लम की मुहब्बत फिर जोश में आई तो फिर उन्होंने दुबारा इस्लाम क़बूल कर लिया। बहरहाल ये अच्छे मेहनती थे, पढ़ने वाले थे। यूनीव-

सिटी आफ़ बस्रा से उन्होंने डिग्री हासिल की। वहां के कॉलेज आफ़ बिज़नस ऐडमिनिस्ट्रेशन और इकनॉमिक्स में तालीम हासिल की। ज़बानें सीखने का शौक़ था। इसलिए उन्होंने अच्छी अंग्रेज़ी ज़बान सीखी। फ्रैंच भी सीखी, स्पेनिश सीखी, जर्मन सीखी और किसी क़दर रशियन ज़बान भी थे। 2009 ई. में ये अपनी पत्नी के साथ यहां यू.के शिफ़्ट हो गए तो अल्लाह तआला ने यहां उन्हें एक पुत्री भी दी। बर्तानिया पहुंचने के बाद फ़रास साहिब ने इत्तिफ़ाक़न एम. टी. ए. अल् अर्बिया देखा और इस पर उन्हें उनके सवालात के जवाबात मिलने शुरू हो गए। आख़िर उनके दिल में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सदाक़त इस हद तक घर कर गई कि अक्सर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की मदह में लिखे गए क़सायद गुनगुनाते रहते थे। इसी दौरान उन्होंने स्वप्न में हज़रत ख़लीफ़-तुल-मसीह अल् राबे रहमहुल्लाह तआला को देखा कि एक बड़ी सफ़ैद मस्जिद में ख़िताब फ़र्मा रहे हैं और आप के चेहरा मुबारक से नूर निकल रहा है। फिर बाद में एक ख़ूबसूरत नौजवान को देखा जो अख़बारी नुमाइंदे की तरह माईक्रो फ़ोन में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के निहायत ख़ूबसूरत नामों से वर्णन करते हुए लोगों को आपकी इत्तिबा करने की तलक़ीन कर रहा था। आख़िर उन्होंने इस पर 2012 ई. में बैअत कर ली। शेफ़्लेड (Sheffield) के डाक्टर बिलाल ताहिर साहिब से उनका राबिता हुआ। उनके माध्यम से उन्होंने बैअत की दरख़ास्त भिजवाई। फिर उनके साथ मिलकर सिलसिले की मुख़्तलिफ़ कुतुब और सवाल-ओ-जवाब का अध्ययन किया और बहुत जल्द जमाती अफ़्क़ार-ओ-अक़ायद की तब्लीग़ और एतराज़ात के जवाब देने और जमाअत का मोस्सर इलमी दिफ़ा करने लग गए।

अरदन से यज़न रबाबह साहिब लिखते हैं कि बरादरम् फ़रास अब्दुल वाहिद साहिब बहुत अच्छे अहमदी थे। जमाअती कुतुब का मुताला करते। मुआनेदीन और मुरतद होने वालों को जवाब दिया करते थे। वह हक़ीक़ी तौर पर इस्लाम अहमदियत का दिफ़ा करने वाले थे। फेसबुक पर अहमदी अहबाब उनको फ़ारस-ए-अहमदियत अर्थात अहमदियत का घुड़सवार जंगजू कहते थे। मेरी आँखें उनका वर्णन करते हुए नम हैं। ख़ुदा तआला उनकी मग़फ़िरत फ़रमाए।

तमीम अबू दक़्क़ा साहिब लिखते हैं कि फ़रास साहिब ग़ैरमामूली मुहक़्क़िक़ और अरबी और अंग्रेज़ी में अनुवाद करने और लिखने की बेहतरीन सलाहीयत रखते थे। जमाअती वेबसाइट पर सवालों के जवाब देने वाली टीम के सरगर्म मैंबर थे। उनके जवाबात हमेशा मुकम्मल और मुदल्लिल हुआ करते थे जिनकी ताईद में वे जमाअती और ग़ैर जमाती अरबी और अंग्रेज़ी वसातत से हवाले वर्णन किया करते थे। बाअज़ अरब मुरतद होने वाले और मुनाफ़ेक़ीन ने जब फ़ित्ना खड़ा किया तो मरहूम फ़रास साहिब उनके एतराज़ात के जवाब देने वालों और उनका मुक़ाबला करने वालों की प्रथम सफ़ में शामिल थे। अपने कामिल ईमान और मुहब्बत की वजह से बड़ी शिद्दत से जमात और ख़िलाफ़त का दिफ़ा करते थे।

डाक्टर एमन ऊदा साहिब कहते हैं कि मरहूम भाई फ़रास अब्दुल वाहिद को उनके वसीअ इलम और ग़ैरमामूली ज़हानत, उनके मज़ामीन और तहरीरों के हवाले से खासतौर पर जानते थे। उन्हें जमाअत में शामिल हुए ज़्यादा अरसा नहीं गुज़रा था फिर भी उन्होंने निहायत क़लील अर्से में जमाअती अफ़्क़ार-ओ--अक़ायद के बारे में गहरा इलम हासिल करके अपने मोस्सर जवाबात से मुख़ालेफ़ीन के मुँह-बंद कर दिए थे। मरहूम को चंद वर्ष क़बल हमारी अरबी वेबसाइट पर सवालों के जवाब देने की ज़िम्मेदारी सौंपी गई थी जिसे उन्होंने आख़िरी समय तक बड़ी तनदही से निभाया। बड़ी लगन और ख़ुलूस से काम किया। सवाल-ओ-जवाब की अरबी वेबसाइट "बिसात अहमदी" पर उनके तक़रीबन आठ सौ आर्टीकल या एतराज़ात के जवाबात उनकी गहिरी इलमी शख़्सियत होने और जमाती अफ़्क़ार-ओ-अक़ायद को फैलाने और मुख़ालेफ़ीन के एतराज़ात के जवाब देने की लगन की गवाही देते रहेंगे।

अल्लाह तआला मरहूम से मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए। दर्जात बुलंद फ़रमाए। उनकी पत्नी और बच्ची का भी कफ़ील हो। सब्र और हौसला उन्हें अता फ़रमाए। उनकी नेक ख़्वाहिशात अपने अहल-ओ-अयाल के लिए क़बूल फ़रमाए। दुआएं क़बूल फ़रमाए और अल्लाह तआला जमाअत को भी इन जैसे मज़ीद नेमुल-बदल अता फ़रमाए। नमाज़ के बाद इन शा अल्लाह जैसा कि मैं ने कहा नमाज़ जनाज़ा अदा करूँगा

★ ★ ★

पृष्ठ 02 का शेष

ज़िंदगी के कुछ हालात का वर्णन करूँगा।

1951 ई. के जलसा सालाना के उद्घाटन पर हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत मिर्ज़ा वसीम अहमद साहिब का निकाह उनके साथ पढ़ा और फ़रमाया कि मैं बाअज़ हालात की वजह से जलसे के उद्घाटन से पहले दो निकाहों का ऐलान करना चाहता हूँ। एक उनका था, एक हज़रत ख़लीफ़-तुल-मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हु की पुत्री का था और कहते हैं केवल मैं दो निकाह करूँगा क्योंकि अगर मैं पहले ऐलान करता तो फिर बहुत से निकाहों की दरख़ास्त आ जाती है लेकिन फिर जलसे का जो ये माहौल है इस में अगर ज़्यादा संख्या हो तो फिर सारी तक़रीर का समय भी निकल जाता है बहरहाल इस जलसे पर आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने ये दो निकाह पढ़े और उनकी तरफ़ से वकील उनके चचाज़ाद भाई सय्यद दाऊद अहमद साहिब निर्धारित हुए और हज़रत ख़लीफ़-तुल-मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस निकाह में यह भी फ़रमाया था कि उमूमन मैं अपनी लड़कियों के निकाह वाक़फ़ीन-ए-ज़िंदगी से ही पढ़ता हूँ। पीर मुईनुद्दीन साहिब के साथ अमतुल नसीर साहिबा का निकाह हुआ था।

(उद्धृत ख़ुतबात-ए-महमूद रज़ियल्लाहु अन्हु भाग सोम पृष्ठ 650-651)

जब उनकी शादी हुई तो हज़रत डाक्टर मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु की बेगम साहिबा की दरख़ास्त पर हज़रत ख़लीफ़-तुल-मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हु रुख़्साना के समय लड़की वालों की तरफ़ से शरीक हुए थे। (उद्धृत रोज़नामा अल्फ़ज़्ल लाहौर 26 अक्तूबर 1952 पृष्ठ 3) अपने बेटे की तरफ़ से शामिल नहीं हुए, बारात लेकर नहीं आए बल्कि लड़की वालों की तरफ़ से शामिल हुए।

अल्लाह तआला ने उनको तीन बेटियों और एक बेटे से नवाज़ा। एक पुत्री उनकी अमतुल क़ुद्दूस साहिबा आजकल सदर लजना पाकिस्तान हैं, मंसूर अहमद ख़ान साहब वकीलुल-अला तहरीक-ए-जदीद की बेगम हैं। बाक़ी दो बेटियां जो हैं, एक कैप्टन माजिद ख़ान साहब की पत्नी हैं अमतुल क़ुद्दूस साहिबा, दूसरी अम्तुल क़ुद्दूस साहिबा डाक्टर इबराहीम मुनीब की बीवी हैं। मिर्ज़ा कलीम अहमद उनके बेटे अमरीका में रहते हैं।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक अवसर पर मिर्ज़ा वसीम अहमद साहिब को फ़रमाया था जबकि आप शादी के सिलसिले में आए हुए थे और शादी को अभी कुछ दिन हुए थे और अपनी पत्नी को साथ ले जाने के लिए काग़ज़ात तैयार करवा रहे थे तो जैसा कि पाकिस्तान और हिन्दुस्तान के ताल्लुक़ात में उतार चढ़ाओ आता रहता है, उन दिनों में ऐसी खिचावट पैदा हो गई कि

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने उन्हें कहा कि बीवी के काग़ज़ात तो बनते रहेंगे तुम उसको छोड़ो और वापस फ़ौरी तौर पर कादियान चले जाओ क्योंकि वहां हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ख़ानदान का कोई फ़र्द होना चाहिए।

और फ़ौरी तौर पर सीट बुक करवाओ जहाज़ की, अगर जहाज़ में सीट नहीं भी मिलती तो तुम्हारा फ़ौरी जाना ज़रूरी है चाहे चार्टर्ड जहाज़ करा के जाना पड़े। आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया क्योंकि अगर तुम वहां नहीं होगे और अपना नमूना पेश न किया और क़ुर्बानी नहीं दी तो लोग फिर किस तरह क़ुर्बानी देंगे। जहां ये क़ुर्बानी मिर्ज़ा वसीम अहमद साहिब की थी वहां साहबज़ादी अम्तुल क़ुद्दूस साहिबा की भी क़ुर्बानी थी।

यह पता नहीं था कि कब काग़ज़ात मुकम्मल होंगे। हालात तनावग्रस्त हैं और कहीं हालात अधिक ख़राब न होते जाएं लेकिन ख़लीफ़-ए-वक़्त का हुक्म था इसलिए बड़ी ख़ुशी से अपने पति को विदा किया और दीन को दुनिया पर मुक़द्दम रखा। जब हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु मियां वसीम अहमद साहिब को रवाना करने के लिए लाहौर एयरपोर्ट पर आए थे तो डाक्टर हशमत उल्लाह साहिब ने बताया कि जब तक जहाज़ नज़रों से ओझल नहीं हो गया हज़रत ख़लीफ़ा सानी रज़ियल्लाहु अन्हु एयरपोर्ट पर खड़े नियमित जहाज़ को देखते रहे और दुआएं करते रहे फिर जब शादी के एक वर्ष के बाद उनके काग़ज़ात मुकम्मल हो गए कहती हैं।

मैं कादियान जाने लगी तो हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने खासतौर पर मुझे हिदायत की थी कि उम्म-ए-नासिर के मकान में रहना जहां हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के कसरत से क़दम पड़े हैं और उनके सेहन में हज़ूर ने दरस भी दिया हुआ है।

(उद्धृत ख़ुतबात-ए-मसरूर भाग 5 पृष्ठ 180-181-184-185)

साहबज़ादी अमतुल क़ुद्दूस साहिबा ने कादियान जा कर जमाअत की महिलाओं

को,औरतों को इकट्ठा करने में, आर्गेनाईज़ (organise) करने में, दरवेशों के बीवी बच्चों से हमदर्दीयां करने में बड़ा किरदार अदा किया। और उनकी वजह से वहां की औरतों को बड़ी तसल्ली होती थी। बेशुमार ख़ुतूत मुझे इस बारे में वहां के दरवेशों की बीवियों के या बेटियों के आए हैं। हज़रत ख़लीफ़-तुल-मसीह अलाबा ने लंदन पहुंचने के बाद पहला ख़ुतबा जुमा 4-मई 84 ई. में दिया और दुनिया के अहमदियों को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के शब्दों में مَنۡ اَنۡصَارِیۡۤ اِلَی اللّٰہِ कह कर पुकारा और इशाअत-ए-इस्लाम के लिए एक वसीअ प्रोग्राम का ऐलान किया।

(उद्धृत ख़ुतबात-ए-ताहेर भाग 3 पृष्ठ 232-233 ख़ुतबा 4 मई 1984 ई.) और यह भी फ़रमाया कि इन अग़राज़ को पूरा करने के लिए एक बड़े कम्पलैक्स की ज़रूरत है। दो नए मराकज़ यूरोप के लिए बनाने का प्रोग्राम है, एक इंग्लिस्तान में और एक जर्मनी में। इसके लिए अल्लाह तआला रुपया अपने फ़ज़्ल से मुहय्या करेगा।

(उद्धृत ख़ुतबात-ए-ताहिर भाग 3 पृष्ठ 264 से 266 ख़ुतबा 18,मई 1984 ई.) और लोगों को तहरीक की कि इस में शामिल हों।

इसलिए कादियान की लजना ने एक मर्तबा फिर वालेहाना लब्बैक कहा और साहबज़ादी अमतुल कुद्दूस साहिबा जो सदर लजना भारत थीं उन्होंने अपनी रिपोर्ट में लिखा कि अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से लजना इमाइल्लाह भारत ने हज़ूर रज़ि-यल्लाहु अन्हु की आवाज़ पर लब्बैक कहते हुए इस तहरीक में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया है और ज़ेवर और नक़दी, जिसके पास जो कुछ था पेश कर दिया है। ख़ुद उन्होंने भी अपना सारे का सारा ज़ेवर पेश कर दिया। लजना भारत की तरफ़ से पहले कादियान की लजना के वादा जात हज़रत ख़लीफ़-तुल-मसीह अल् राबे रहमहुल्ला की ख़िदमत में भिजवाए गए। इस पर हज़रत ख़लीफ़-तुल-मसीह अल् राबे ने 10 अगस्त 84 ई. के ख़ुतबा जुमा में कादियान की लजना का वर्णन करते हुए फ़रमाया कि "कादियान की लजनात के विषय में मुझे एक रिपोर्ट मिली है और इस का मुझे इंतेज़ार था क्योंकि जब तहरीक जदीद की क़ुर्बानियों का आग़ाज़ हुआ था तो कादियान की मस्तूरात को ग़ैरमामूली क़ुर्बानी के मुज़ाहरा की तौफ़ीक़ मिली थी। अब तो बहुत थोड़ी महिलाएं वहां रह गई हैं लेकिन जितनी भी हैं मुझे इंतेज़ार था कि उनके मुताल्लिक़ भी सूचना मिले क्योंकि उनका हक़ है कि वे क़ुर्बानी के मैदान में आगे रहें और कादियान का नाम जिस तरह इस ज़माने में माह महिलाओंने ऊंचा किया था आज फिर उसे ऊंचा करें तो अल्हम्दुलिल्ला कि वहां की रिपोर्ट भी मौसूल हुई है। सदर लजना इमाइल्लाह भारत सूचना देती हैं कि मैंने कादियान की लजना और नास्रात के वादे नए मराकज़ के लिए हुज़ूर की ख़िदमत में 16 जुलाई को लिखे थे।' उन्होंने लिखा कि "हुज़ूर के ख़ुतबात ने एक तड़प यहां की औरतों में पैदा कर दी और महिज़ अल्लाह के फ़ज़्ल से जो कुछ उनके पास था उन्होंने पेश कर दिया है लेकिन प्यास है कि अभी नहीं बुझी। इतनी शदीद तड़प अभी है कि और हो तो ख़ुदा के कामों के लिए और भी पेश कर दें।"

(ख़ुतबात-ए-ताहिर भाग 3 पृष्ठ 434 ख़ुतबा जुमा 10 अगस्त 1984 ई.)

यह ख़त साहबज़ादी अमतुल कुद्दूस का ख़लीफ़-तुल-मसीह अल् राबे रज़िय-ल्लाहु अन्हु को था। 1991 ई. में जब हज़रत ख़लीफ़-तुल-मसीह अल् राबे हिन्दुस्तान तशरीफ़ ले गए, कादियान तशरीफ़ ले गए तो आप रहमहुल्लाह ने फ़रमाया कि ख़ुदा तआला के फ़ज़्ल के साथ हिन्दुस्तान की लजनात में सब के मुताल्लिक़ तो मैं नहीं कह सकता लेकिन कादियान की लजना के मुताल्लिक़ कह सकता हूँ कि माली क़ुर्बानी में ये बेमिस्ल नमूने दिखाने वाली है। कादियान की जमाअत एक बहुत ग़रीब जमाअत है लेकिन मैंने हमेशा देखा है कि जब भी कोई तहरीक की जाए यहां की ख़वातीन और बच्चियाँ ऐसे वलवले और जोश के साथ इस में हिस्सा लेती हैं कि बाअज़ दफ़ा मेरा दिल चाहता है कि उनको रोक दूँ कि बस करो, तुम में इतनी इस्ति-ताअत नहीं है और वास्तव में मुझे ख़ुशी के साथ उनका फ़िक्र भी लाहक़ हो जाता है लेकिन फिर मैं सोचता हूँ कि जिसकी ख़ातिर उन्होंने क़ुर्बानियां कीं वे जानता है कि किस तरह उनको बढ़ चढ़ कर अता करना है। वही अल्लाह अपने फ़ज़्ल के साथ उनके मुस्तक़बिल को दीन और दुनिया की दौलतों से भर देगा।

फिर आप रहमहुल्लाह ने फ़रमाया कि एक अवसर पर जब मैंने मराकज़ के लिए तहरीक की तो अहमदी बच्चियों ने जो छोटी-छोटी कुंजियाँ बना रखी थीं वे टूटने लगीं और चंद पैसे, चंद टके उन्होंने जो बचाए हुए थे वे दीन की ख़ातिर पेश कर दिए। फिर फ़रमाया कि हमारा रब भी कितना मोहसिन है, कितना अज़ीमुश्शान है। बाअज़ दफ़ा बग़ैर मुहब्बत और वलवले के करोड़ों भी इसके क़दमों में डाले जाएं तो वे रद्द कर देता है, ठोकर भी नहीं मारता, उनकी कोई हैसियत नहीं परंतु एक मुख़लिस और ग़रीब प्यार मुहब्बत के साथ अपनी जमा पूँजी पेश करे तो उसे बढ़कर प्यार और मुहब्बत से क़बूल करता है जैसे आप अपने मुहब्बत करने वाले और महबूबों के तोहफ़ों को लेती और चूमती हैं, ख़ुदा के भी चूमने के कुछ रंग हुआ करते हैं और मैं जानता हूँ और यक़ीन रखता हूँ कि इन अर्थों में ख़ुदा ने इन चंद कोड़ियों को ज़रूर चूमा होगा। (उद्धृत हव्वा की बेटिया पृष्ठ 87-88 जलसा सालाना कादियान महिलाओं से ख़िताब फ़र्मूदा 27 दिसंबर 1991 ई.) यह आप रहमहुल्लाह ने वहां जलसे पर लजना में जो ख़िताब फ़रमाया था उसका एक इक़तेबास है।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने उनको जब कादियान भिजवाया तो यह भी नसीहत फ़रमाई थी कि लजना की जमाअतों को इकट्ठा करना है। आप वहां जाते ही पहले जनरल सैक्रेटरी कादियान बनें। फिर 1955 ई. में सदर लजना मुक़ामी और फिर सदर लजना भारत चयनित हुईं। 59 ई. में लजना मुक़ामी की सदारत के लिए किसी और का इंतेख़ाब हुआ और आप सदर लजना भारत के तौर पर काम करती रहीं। अल्लाह के फ़ज़्ल से 1999 ई. तक इस ख़िदमत पर फ़ायज़ रहीं। इस के बाद एज़ाज़ी मैंबर रहीं। अपने उर्स-ए-ख़िदमत के दौरान हिन्दुस्तान की मजालिस के दौरे भी किए, उनकी ख़िदमात का अरसा छयालीस वर्ष बनता है। लजना के काम को आर्गेनाईज़ करने के लिए आग़ाज़ में बहुत ज़्यादा मुश्किलात पेश आईं। ख़त लिखतीं जबक उस का जवाब न आता। फिर साहिबज़ादा मिर्ज़ा वसीम अहमद साहिब के नाम से एक ऐडरैस दिया गया इस तरह आहिस्ता-आहिस्ता आपने जमाअतों को मुत्तहिद करना शुरू किया। हिन्दुस्तान में बहुत सारी लोकल ज़बानें हैं, एक दिक़्क़त यह भी आई कि लोकल ज़बानों में ख़ुतूत मौसूल होते थे। इसलिए मोअ-ल्लेमीन से उनके अनुवाद किराए जाते फिर आहिस्ता-आहिस्ता हज़रत मिर्ज़ा वसीम अहमद साहिब के साथ मिलकर बैरूनी जमाअतों के दौरे भी शुरू किए और इस तरह उन्होंने इन जमाअतों को जिनको पार्टीशन के बाद काफ़ी ज़्यादा मदद की ज़रूरत थी, आर्गेनाईज़ करने की ज़रूरत थी किया।

फिर इसी तरह उनकी पुत्री अमतुल अलीम लिखती हैं कि ख़िलाफ़त-ए-राबिया में भारत से मौसूल होने वाले दुआइया ख़ुतूत के ख़ुलासाजात की एक टीम भी उन्होंने बनाई और हज़ूर को खुलासे लिखे जाते थे। इस पर हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहमहुल्लाह ने बड़ी ख़ुशनुदी का इज़हार किया। क़ुरआन की बहुत ज़्यादा ख़िदमत की है। कादियान की 250 से ज़ाइद बच्चियों को क़ुरआन पढ़ाया, सिखाया। स्कूल की लड़कियां क़ुरआन पढ़ने पहले सुबह सुबह आतीं फिर दोपहर को आतीं और ग्रुपस में आतीं। भारत में जिन बच्चियों ने एफ़ ए या एफ़ एस सी किया होता था तो पढ़ाई से वक़्फ़ा के दौरान वे तीन तीन माह कादियान में रिहायश इख़्तेयार करतीं। उनकी पुत्री कहती हैं कि हमारी अम्मी उन्हें सुबह दोपहर और शाम क़ुरआन का अनुवाद पढ़ातीं।

लजनात को बहुत मुनज़्ज़म किया। बहुत मेहनत से उन्होंने काम सिखाया। ख़िलाफ़त से ताल्लुक़ की कहानियों के रूप में तलक़ीन करती थीं और जब वाक़ियात वर्णन करती थीं तो इस से फिर बच्चियों का, औरतों का ख़िलाफ़त से ताल्लुक़ बढ़ता था। ग़ैरमामूली वस्फ़ मेहमान-नवाज़ी था। उनकी पुत्री कहती हैं कि हमारे अब्बा का हमेशा साथ दिया। बहुत ग़रीबाना हालात थे। दोपहर को केवल मूंग की दाल होती थी और अब्बा ने दूध दही के लिए एक भैंस रखी हुई थी। कोई मेहमान आता तो जो कुछ खाने के लिए उपलब्ध होता, जो पक्का होता वह बिलातकल्लुफ़ पेश कर देतीं। जो मेहमान आता उस को मौसम के एतबार से शर्बत और चाय भी पेश किया करतीं। बाद में जब कशाइश हुई तो उसी लिहाज़ से खाना पेश करतीं। और लोग अपना घर समझ कर आपके पास आया करते थे। एक अच्छी बीवी थीं, हर वक़्त साथ देने वाली, मुश्किल समय में साथ खड़ी होने वाली। कभी किसी चीज़ की डीमांड नहीं की। जो भी उनके ख़ावंद की तरफ़ से, मियां वसीम अहमद साहिब की तरफ़ से गुज़ारा मिलता ख़ुशी से उसी में गुज़ारा करतीं और अल्लाह तआला ग़ैरमामूली बरकत भी इस में डालता। सफ़ाई पसंद, सलीक़ा शआर थीं। उनकी पुत्री कहती हैं कि मिर्ज़ा वसीम अहमद साहिब की जब वफ़ात हुई है तो उन्होंने ख़ाब देखा कि गोया वह आख़िरी सफ़र पर जा रही हैं, वह भी तैयारी कर रही हैं तो हज़रत ख़लीफ़-तुल--मसीह सालिस ख़ाब में उनकी आए और फ़रमाया अभी तुम्हारा वीज़ा नहीं लगा। इसलिए अल्लाह के फ़ज़्ल से इस ख़ाब के बाद उन्होंने लंबी ज़िंदगी गुज़ारी।

2007 ई. में जब मिर्ज़ा वसीम अहमद साहिब बीमार हुए हैं और फिर अल्लाह तआला ने उन्हें शिफ़ा दे दी तो शिफ़ा के बाद उन्होंने हैदराबाद की जमाअतों के दौरे का प्रोग्राम बनाया और अपनी पत्नी को भी साथ ले गए। वहीं अमतुल कुद्दूस साहिबा ने एक ख़ाब देखी। डरावनी ख़ाब थी, डर गईं कि जिस तरह मिर्ज़ा वसीम अहमद साहिब का वह आख़िरी समय है तो उस समय अच्छे भले तंदरुस्त थे लेकिन बहरहाल उसके बाद उन्होंने इसरार किया कि वापस कादियान चलें। कादियान आते ही वे दुबारा बीमार हुए और इसी बीमारी में उनकी वफ़ात भी हो गई।

आख़िरी उम्र में नज़र चली गई थी और आले के साथ सुनवाई भी होती थी। सुनवाई भी ख़त्म हो गई थी लेकिन बहुत ख़ुशी से ज़िंदगी बसर की, कभी नाशुक्री नहीं की, जब भी हाल पूछा गया तो हमेशा प्रत्येक दफ़ा अल्हम्दुलिल्ला कहती थीं। मराकज़ की तहरीक पर भी जो उनके पास ज़ेवर था वे उन्होंने फ़ौरन दे दिया जैसा कि मैंने बताया है। ख़लीफ़-ए-वक़्त की तरफ़ से कोई भी तहरीक होती तो पहला चंदा क़ादियान में मिर्ज़ा वसीम अहमद साहिब की तरफ़ से और उनकी पत्नी की तरफ़ से होता था। उनकी पुत्री कहती हैं कि हम क़ुरआन-ए-करीम पढ़ने में कोई ग़लती करते और हमारी अम्मी किसी दूसरे कमरे में होतीं तो वहीं से हमें तसहीह करवा दिया करती थीं। ऐसे लगता था जैसे उनको क़ुरआन याद हो जबकि वे हाफ़िज़ा नहीं थीं लेकिन बकसरत तिलावत-ए-क़ुरआन की वजह से उनको याद हो गया था। जब मिर्ज़ा वसीम अहमद साहिब एतेकाफ़ बैठते। उनको खाना भिजवातीं तो साथ ही ग़रीब एटेकाफ करने वालों को भी खाना भिजवातीं। इसी तरह बोर्डिंग में मौजूद लड़कों को और मोअल्लेमीन के लिए भी खाना भिजवातीं। इसी तरह लोगों का इतना ख़्याल था कि चाहे बीमार हों, बुख़ार हो, कुछ भी हो कहीं किसी ख़ुशी ग़मी में जाना होता तो ज़रूर जातीं। क़ादियान में मुख़्तलिफ़ वर्गों के लोग थे, उनकी बच्चियों को सिलाई सिखातीं, दुल्हन बना दिया करतीं। एक कल्चर सब के साथ मिल-जुल कर रहने का पैदा कर दिया था। रब्वाह में 2005 ई. में लजना ने सराय मसरूर बनाया है, अच्छी बड़ी बिल्डिंग है तो वहां भी बजाय अपनी तरफ़ से चंदा देने के अपने पति की तरफ़ से एक लाख रुपय की रक़म दी।

फिर कहती हैं कि पार्टीशन के बाद रतन बाग़ लाहौर में और रब्वाह के कच्चे घरों में हज़रत अम्मां जान को क़ुरआन-ए-करीम सुनाया करती थीं और इसी तरह कहती हैं कि अम्मां जान किसी न किसी से मल्फ़ूज़ात भी सुना करती थीं, उसके सुनाने का भी अवसर मिलता था।

उनकी छोटी पुत्री अमतुल राऊफ कहती हैं कि बेतुल रियाजात में शाह जी और सुर्ख़ छींटों वाले कमरे में इतर दीन साहिब और हज़रत अम्मां जान के बड़े वाले कमरे में हाफ़िज़ साहिब मुक़ीम थे, ये तीन शख़्स थे। बाद में भाई अब्दुर्रहीम साहिब भी यहां रहते थे तो कहती हैं जो भी घर में पकता वह खाना इन सबको भेजा जाता था और बैतुदुआ के समय वहां आने का जो औरतों का समय होता था उस के बाद औरतें फिर घर में आ जाती थीं। घर हर वक़्त खुला होता था, कोई पाबंदी नहीं थी, कोई घंटी नहीं थी। आराम से औरतें अंदर दाख़िल हो जाया करती थीं। फिर यह कहती हैं जब मिर्ज़ा वसीम अहमद साहिब की वफ़ात हो गई और इनाम ग़ौरी साहिब नाज़िर आला बने तो उम्मी ने उनकी कामिल इताअत का इज़हार किया और प्रत्येक काम के लिए निर्धारित तरीक़ से दरख़ास्त दिया करती थीं। उन्होंने अपनी वसीयत का चंदा और हिस्सा जायदाद अपनी ज़िंदगी में अदा कर दिया और इसी तरह तहरीक-ए-जदीद के दफ़्तर अव्वल में शामिल थीं। फिर अपनी बच्चियों को, बच्चों को नसीहत की कि नमाज़ अव्वल समय में अदा किया करो क्योंकि सबसे पहला हिसाब नमाज़ के बारे में लिया जाएगा। अगर वह हिसाब साफ़ तो साफ़।

फिर कहती हैं नियमित कई बच्चियाँ उन्होंने पालीं। न केवल उनकी बहुत अच्छे रंग में परवरिश की, उनकी तर्बीयत की, पहले उन्हें नाज़रा क़ुरआन पढ़ाया, फिर अनुवाद पढ़ाया, फिर उनकी शादियां भी करवाईं। बिहार रांची से एक शख़्स अपनी पुत्री के साथ अहमदी हुए। बहुत बूढ़े थे। अपनी पुत्री को हमारी अम्मी के पास लाए और कहा कि नामालूम कितना अरसा मैं ज़िंदा रहूं। मेरे बाद इस लड़की के भाई उसे मार देंगे इसलिए आप पास रखें। उस समय लड़की की उम्र तक़रीबन पच्चीस वर्ष थी। कहती हैं मेरी अम्मी ने उस उम्र में उसे क़ुरआन नाज़रा पढ़ाया फिर तर्जुमा से पढ़ाया हालाँकि उसे ज़बान भी नहीं आती थी और अनपढ़ थी। बाद में फिर उस की शादी करवाई।

ज़माना दरवेशी के दौरान मआशी हालात ख़राब थे। किसी दरवेश की पुत्री की शादी होती तो उसे अपना ज़ेवर दे आतीं और कहतीं कि जब तक तुम्हारा दिल करे उसे पहनो फिर वापस कर देना। फिर अगले किसी दरवेश की शादी होती तो फिर वह इस को दे दिया जाता। इस तरह बहुत सी बच्चियों ने आपके ज़ेवर से लाभ प्राप्त किया क्योंकि शुरू दरवेशी के ज़माने में दरवेशों के हालात भी इतने अच्छे नहीं थे लेकिन जब बाद में बच्चे बाहर निकले, फिर पैसे आने लगे। बच्चे बड़े हो गए, कमाने भी लगे तो कुछ बचत वचत जो भी होती थी उस समय उनके पास वह अपने घरों को ग़ैर महफ़ूज़ समझने की वजह से उनके पास अमानत के तौर पर रखवा दिया करते थे और ये कहती हैं कि हमारी अम्मी ने अलमारी में सारी अमानतें रखी होती थीं। किसी के ज़ेवर हैं, किसी के पैसे हैं, कुछ है और बेशुमार अमानतें कहती हैं मैं ने देखी हैं उनके पास और जो भी अमानत लेने वापस आता तो मुझे कहतीं कि अलमारी में से फ़ुलां जगह से निकाल लाओ। तो जिसको अमानत वापस करतीं पहले उसे कहतीं कि मेरे सामने खोल के देख लो, तुम्हारी सारी चीज़ें पूरी हैं और जब वह कहती कि हाँ पूरी हैं तो फिर मुतमइन होतीं। तो बहरहाल उस ज़माने में ग़ुर्बत थी। लेकिन सब दरवेश अच्छे फ़ैमिलियों के थे। उनकी कोशिश होती थी कि उनकी बच्चियाँ जब इबतेदाई तालीम हासिल कर के अगर आगे तालीम हासिल कर रही हैं तो ठीक है अन्यथा ये उनको दफ़्तर बुला लिया करतीं, लजना के काम करवाया करतीं कि फ़ारिग़ नहीं बैठना। जब तक शादी नहीं होती लजना के काम करो। फिर दफ़्तर तो बाक़ायदा था कोई नहीं तो घर में छोटा सा दफ़्तर बनाया हुआ था और इसी में स्कूल का भी काम होता था। काफ़ी रश् होता था लेकिन ख़ुशी से सारे काम सरअंजाम दे रही होती थीं फिर जो भी बच्चियाँ काम के लिए आतीं उनकी ज़याफ़त इत्यादि करतीं। खाने का समय होता तो अगर खाना नहीं तो चाय इत्यादि पिलातें। इसी तरह उन बच्चियों को सुखाती भी थीं कि खाने की मेज़ें किस तरह लगानी हैं और इस तरह बाअज़ को कहती थीं कि सीख लो आज क्योंकि जब तुम्हारे अच्छे घरों में रिश्ते हो जाऐंगे तो ये न हो कि तुम्हें कोई जाहिल कहे। इतनी फ़िक्र होती थी लड़कियों की और कई लड़कियां जब अच्छे घरों में ब्याही गईं तो उनकी इस तर्बीयत की वजह से उनको कोई दिक़्क़त नहीं हुई। कई महिलाओं ने, लड़कियों ने इस बात का वर्णन किया है कि हमने इस तरह उनसे तर्बीयत हासिल की है और इस वजह से फिर ससुराल के साथ एडजस्टमंट में भी कभी मुश्किल पेश नहीं आई। इसी तरह बहुत सारी बच्चियों का जहेज़ अपने हाथ से दिया।

ईद वाले दिन दरवेशों की बेवगान के घरों में ईदी देने के लिए ख़ुद जातीं। मिर्ज़ा वसीम अहमद साहिब भी साथ होते अगर वे कभी न जाते तो ये ख़ुद अकेली चली जाया करती थीं। किसी ने उनके सामने वर्णन किया कि अमुक शख़्स ने रब्वाह में बड़ा आलीशान घर बनाया है तो कहती हैं कि मेरी अम्मी ने उस पर कहा मैं ने अल्लाह से एक बात की है कि मुझे क़ादियान में ये बरकतों वाला घर मिला है अर्थात यहां रहने की तौफ़ीक़ मिली और यहां हज़रत ख़लीफ़-तुल-मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हु की बहू बन के आई हूँ मेरे लिए यही बहुत है। हाँ जन्नत में मुझे ज़रूर एक आलीशान घर अता करना।

ये है मोमिनाना शान और दुनिया की चीज़ों से बेनियाज़ी। हज़रत मीर मुहम्मद इस्माईल साहब रज़ियल्लाहु अन्हु के बारे में उन्होंने लिखा कि क्योंकि मैं बचपन से ही ज़रा सफ़ाई पसंद थी इसलिए मीर साहिब अपने कमरे की सफ़ाई की किसी को इजाज़त नहीं देते थे केवल मैं जाती थी क्योंकि मैं उनकी चीज़ें जहां पड़ी होती थीं नोटिस, किताबें, काग़ज़ जो भी कुछ जहां पड़ा होता था वहीं दुबारा साफ़ कर के रख दिया करती थी और इसलिए उन्होंने कहा था कि सिवाए अमतुल क़ुद्दूस के मेरे कमरे में कोई नहीं आएगा।

कुछ बच्चियाँ अब्दुर्रहमान जट साहिब से भी क़ुरआन-ए-करीम पढ़ती थीं। फिर जो बच्ची दसवीं का इमतेहान देती थी उस से पूछती थीं कि उन्होंने क़ुरआन-ए-करीम का अनुवाद पढ़ना शुरू कर दिया है? जो बच्चियाँ दसवीं क्लास पास कर के निकलतीं कहती हैं कि वह हमारी अम्मी के पास आ जातीं और अनुवाद पढ़ती। एक समय में तीन क्लासें चल रही होती थीं और तीन वर्ष के अंदर अंदर उनको पूरा क़ुरआन-ए-करीम का अनुवाद पढ़ातीं और साथ साथ गरेमर भी बताती जाती थीं। कई लोगों ने, बच्चियों ने, औरतों ने, मुझे लिखा कि हमें फ़िक़्ह इत्यादि भी पढ़ाती थीं।

ये ज़रूर कहा जाता था कि क़ुरआन-ए-मजीद मुकम्मल करना, तो एक लगन होती थी कि कोई भी बची मुझसे क़ुरआन-ए-करीम ख़त्म किए बग़ैर न जाए। तहज्जुद की नमाज़ का बहुत एहतेमाम करती थीं। आख़िरी बिमारी में जब ज़्यादा बिमार हो गईं तब भी यही ख़्याल था कि तहज्जुद के लिए मुझे जगाना है। जब तक रोज़े की ताक़त थी रोज़ा रखती रहीं। तरावीह के लिए बाक़ायदा मस्जिद में जाया करती थीं। क़ादियान में बाक़ी दिनों में तो घर में नमाज़ें पढ़ती थीं लेकिन रमज़ान में खासतौर पर नमाज़ों के लिए मस्जिद जाया करती थीं।

ख़िलाफ़त से बे-इंतेहा मुहब्बत थी। ख़लीफ़ा-ए-वकत को ख़त लिखती थीं उनकी पुत्री कहती हैं जवाब में अगर कभी कोई ख़ुशनूदी का इज़हार होता तो बड़े शौक़ से हम लोगों को बताया करती थीं कि देखो यह ख़ुशनुदी का इज़हार हुआ है।

1991 ई. में हज़रत ख़लीफ़-तुल-मसीह अल् राबे का जब दौरा हुआ है तो अपने हाथ से सारे कमरे को दुरुस्त किया घर को ठीक किया। इसी तरह 2005 ई. में जब मैंने दौरा किया है तो उस समय भी ख़ुद हमारे कमरे को ठीक किया, करवाया, पलंग इत्यादि सैट किए, बिस्तर वग़ैरा बिछाए और एक इख़लास के साथ, वफ़ा के साथ सब काम करने वाली थीं। इसी तरह इसरार कर के बावजूद मेरे ये कहने पर कि खाना अलैहदा हमारा पकता रहेगा उन्होंने कहा कि एक खाना तो हमारी तरफ़ से रोज़ाना

आया करे। और वाक़ई एक डिश भेजती रहीं। और बड़े एहतेमाम से पकाया करती थीं। कहती हैं कि मेरे अब्बा की वफ़ात के बादामी नमाज़ पढ़ रही थीं और रो रही थीं और वही शब्द कह रही थीं जो हज़रत अम्मां जान ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की वफ़ात के समय कहे थे कि हे ख़ुदा ये तो हमें छोड़े जा रहे हैं, तू न हमें छोड़ना और कहती हैं कि मेरा मुशाहिदा है और मेरा यक़ीन है कि दुआ क़बूल हुई क्योंकि उसके बाद हमें वीज़े मिले। बच्चियाँ सारी क्योंकि ब्याह के पाकिस्तान में आ गई थीं तो मल्टीपल (multiple) वीज़े भी मिल गए और आना जाना भी रहा और उनके अकेले-पन का उनको एहसास नहीं हुआ। बेटियां उनके पास आती थीं।

उनके बेटे कहते हैं कि ज़्यादा-तर मेहमान दारुल मसीह में ठहरते थे और हमारी अम्मी ग्यारह बारह वर्ष के बच्चों की ख़ुद ट्रेनिंग करतीं कि किस तरह कमरों में गर्म पानी पहुंचाना है। मेहमान की ज़रूरत का ख़्याल रखा करती थीं। इसी तरह जब सरकारी ओहदेदारों के साथ मियां वसीम अहमद साहिब के ताल्लुक़ थे तो ये उनकी बेगमात को भी जमाअत का परिचय क़रवातें और फिर ये ताल्लुक़ बाद में भी उनके साथ क़ायम रखा।

सतनाम सिंह बाजवा वहां के एक बड़े सियास्तदान थे। जब पार्टीशन हुई तो वह पाकिस्तान से हिन्दुस्तान स्थानांतरित हुए। जो आजकल प्रताप सिंह बाजवा हैं उनके वालिद थे। ये मैंबर पार्लीमैंट हैं तो उनकी पत्नी का भी कहते हैं कि इस समय हमारे घर बड़ा आना जाना था और वे अपनी अमानतें भी हमारे पास हमारी अम्मी के पास रखवा दिया करते थे। एक दफ़ा उन्होंने अमानत रखवाई तो वहां उन्होंने उनसे साहबज़ादी अमतुल् कुद्दूस से पूछा कि आपने उसको खोल के देख लिया है? तो उन्होंने कहा आपकी अमानत थी मैं किस तरह उसे खोल सकती थी। आप देख लें उस को ये ठीक है नहीं।

गरीबों का बड़ा ख़्याल रखती थीं एक दफ़ा कहते हैं कि उड़ीसा के किसी गांव में दौरे पर गईं। वहां कुछ लोगों को देने के लिए कुछ नहीं था तो कहते हैं कि हम सारे बच्चे साथ गए हुए थे तो बच्चों के जो ज़ायद कपड़े थे उन लोगों को दे दिए ताकि अपना तन ढांक सकें क्योंकि वे लोग बहुत मुफ़लिस हाल और ख़स्ता-हाल में थे। फिर ये कहते हैं कि हमारी अम्मी ने जिस क़ुरआन से बच्चियों को नाज़रा और तर्जुमा पढ़ाया था वह क़ुरआन हज़रत मीर मुहम्मद इसहाक़ साहब रज़ियल्लाहु अन्हु के अनुवाद पर मुश्तमिल था और क़ुरआन का वह नुस्ख़ा उनको हज़रत अम्मां जान ने तोहफ़ा के तौर पर दिया था।

इब्राहीम मुनीब उनके दामाद हैं, कहते हैं कि मियां वसीम अहमद साहिब की वफ़ात के बाद दस वर्ष तक कादियान में रहीं। शदीद बीमार हुईं तो फिर उनकी बेटियां उनको रब्वाह ले आएं, वीज़ा भी अल्लाह के फ़ज़्ल से एक्स्टंड (extend) होता रहा लेकिन हमेशा यह होता था कि मैंने कादियान से बाहर लंबा अरसा नहीं रहना और जब तक ख़लीफ़-ए-वक़्त की इजाज़त नहीं होती उस समय तक मैं यहां चंद महीने से ज़ियाद नहीं रहूंगी। बहरहाल उन्होंने मुझे ख़त लिखा, मैं ने उनको लिखा कि जितना अरसा चाहें आप रहें। पासपोर्ट, वीज़ा extend होता है तो करवाती रहीं। इस के बाद फिर उन्होंने वहां कुछ अरसा गुज़ारा है।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने उनको कादियान जाते हुए यह भी फ़रमाया था कि कादियान के हिंदू बाज़ारों में नहीं जाना क्योंकि वहां के लोगों ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को गालियां दी हुई हैं। आपने हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हुकी बात का इस क़दर लिहाज़ रखा, ख़्याल रखा कि बाद में हालात बदल भी गए। लोगों ने बड़ी शराफ़त से पेश आना शुरू कर दिया और जलसा पर बहुत सारे लोग वहां जाते थे, अहमदी भी जाते थे, ख़ानदान के लोग भी वहां जाते थे लेकिन आप सत्तर वर्ष तक कादियान के बाज़ार में नहीं गईं, अमृतसर जाके शॉपिंग किया करती थीं।

उनकी नवासी लिखती हैं कि कादियान के छोटे बच्चे आपको नानी अम्मी कहा करते थे और प्रत्येक से आपने नानी जैसा मुहब्बत और शफ़क़त का सुलूक किया। फिर उनकी नवासी लिखती हैं कि एक दफ़ा कमज़ोरी तबीयत की वजह से आराम कर रही थीं। शाम के समय कुछ महिलएं किसी दौर की जमाअत से मिलने आ गईं। कोई बड़ा घर में नहीं था, मैं ने कह दिया कि नानी आराम कर रही हैं और वह एक दुआ की चिट्ठी दे के चली गईं। जब मेरी नानी उठीं। उनको मैंने कहा कि दो औरतें आई थीं तो फ़ौरन चिट्ठी मंगवा कर पढ़ी दुआ की। फिर टेलीफ़ोन करवा कर किसी को हिदायत दी कि जो भी उन्होंने लिखा था चिट्ठी में उस की तामील करवा दें। फिर मुझे समझाया कि लोग बड़ी दूर दूर से मुहब्बत के साथ तुम्हारे नाना के पास आते थे वे उनको ऐसे वापिस नहीं जाने देते थे तो इसलिए तुम भी मेहमानों को इज़्ज़त से बिठाया करो। मुझे सूचना कर देती। नानी का समझाने का अंदाज़ बहुत प्यारा था जो अब तक मेरे ज़हन में है।

उनके नवासे सय्यद हाशिर कहते हैं मैं ने उनको पूछा कि मैं मुरब्बी बन रहा हूँ कोई नसीहत कर दें। जामेआ कैनेडा में पढ़ रहे हैं, तो उन्होंने कहा नसीहत तो समय के ख़लीफ़ा की तरफ़ से सुन रहे हो। नसीहत करने की ज़रूरत नहीं है उनकी बातों को ग़ौर से सुनो और उन पर अमल करो। और फिर मुझे यह भी कहा कि رَبِّ كُلُّ شَيْءٍ خَادِمُكَ رَبِّ فَاحْفَظْنِي وَانْصُرْنِي وَارْحَمْنِي की दुआ पढ़ते रहा करो। फिर फ़ोन पर केवल यही नसीहत होती थी कि अपने वक़्फ़ को पूरे तौर पर निभाना और ख़िलाफ़त का सुल्तान-ए-नसीर बन के रहना।

बहुत से ग़ैर मुस्लिम जनाज़े में शामिल हुए। बड़ी अक़ीदत से उनका वर्णन किया। जिनमें साबिक़ा मैंबर असैंबली फ़तह जंग सिंह भी हैं। उन्होंने भी उनका वर्णन किया कि हमारा तो बचपन उनके हाथों में घरों में गुज़रा है। वह मय्यत को वागा बॉर्डर पर भी लेने गए हुए थे। कहते हैं मैं ने अपनी माँ को ही दूसरी मर्तबा दफ़नाया है। कहते हैं हम छोटे छोटे थे तो घर में जाया करते थे और ये हमें खिलाया पिलाया करती थीं।

उनकी एक नवासी माला कहती हैं ख़िलाफ़त से प्यार और इताअत में हमारे लिए एक मिसाल थीं। कहती हैं जब से फ़ौत हुई हैं सैंकड़ों फ़ोन उनकी ताज़ियत करने के मुझे आए हैं और प्रत्येक उनकी बड़ी तारीफ़ कर रहा था। फिर कुछ अर्से के लिए यह वहां गई थीं, वहां कादियान में रहें तो कहती हैं कि मैंने देखा कि कादियान के लोग कितना उनसे प्यार करते थे और वह इन कादियान के लोगों से कितना प्यार करती थीं। इसी तरह कहती हैं 2008 ई. में उन्होंने मुझे लिखा जब कि आपने कादियान जाना था, जब हालात की वजह से न जा सके। दिल्ली से वापस आ गए और दौरा मुल्तवी हो गया तो बड़ी उदास थीं कि पता नहीं अब मुलाक़ात हो सकती है नहीं।

आबिद ख़ान यहां रहते हैं, उनकी नवासी के ख़ाविद हैं, कहते हैं अपने मिसाली नमूनों से हमें सिखाया कि इन्सान को अपना वक़्फ़ कैसे पूरा करना चाहिए। बड़ा नरम मिज़ाज था लेकिन कहते हैं कि केवल एक दफ़ा मैं ने उनको सख़्ती से बोलते देखा कि कादियान की एक मुक़ामी लड़की की शादी थी तो वह बीमार हो गईं। इस दिन साहबज़ादी अमतुल कुद्दूस को शदीद सिर दर्द था तो उनकी बीमारी को देख के उनकी नवासी ने उनको कहा कि माज़रत कर दें। शादी में शिरकत न करें। आज आराम कर लें तो उन्हों ने कहा कि माला मैं शादी में ज़रूर शिरकत करूँगी। तुम नहीं जानती कि मेरा कादियान वालों के साथ कैसा संबंध है।

इसी तरह अक़ीला इफ़्फ़त साहिबा पत्नी डाक्टर बशीर अहमद नासिर दरवेश कादियान कहती हैं हमेशा नास़्रात और लजना के ज़ेर-ए-एहतेमाम दरवेशों की अज़्वाज और बेटियों की राहनुमाई किया करती थीं। बहुत उम्दगी से इंतेज़ामी मुआमलात सरअंजाम देने में महारत रखती थीं। उनके साथ काम करते समय इन्सान आपकी मुहब्बत, प्यार, हिमायत और इज़्ज़त और एहतेराम को महसूस कर सकता था। आपकी ख़ाहिश होती थी कि समस्त काम और ज़िम्मेदारियाँ अगली नसल तक पहुंचाएं। एक ख़ुद-एतेमाद और मुनज़्ज़म शख़्सियत थीं। जो कुछ भी करतीं इस काम में सफ़ाई होती। हमें क़ुरआन-ए-करीम तर्जुमा के साथ पढ़ाया बल्कि फ़िक़्ह भी सिखाया। आपकी तर्बीयत याफ़ताह जमाअत अहमदिया की नौजवान लड़कियां दूर दूर तक फैली हुई हैं और जमाअतों की ख़िदमत सरअंजाम दे रही हैं।

इसी तरह हैदराबाद दक्कन की बुशरा मुबारका साहिबा हैं। कहती हैं हमारा उनसे गहरा ख़ानदानी ताल्लुक़ था। जलसे के अवसर पर मेहमान-नवाज़ी करने के लिए आधी रात तक ख़ुद खड़े हो कर मेहमानों के खाने पीने और आराम का ख़्याल करतीं और कहती थीं कि ये हमारे नहीं बल्कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मेहमान हैं, उनका ख़्याल रखना चाहिए। प्रत्येक छोटी-छोटी चीज़ का जाएज़ा लेतीं।

इसी तरह साजिदा तनवीर साहिबा ख़ालिद अलादीन साहिब की पत्नी हैं, कहती हैं हिन्दुस्तान की मैंबरा-ए-लजना के लिए एक माँ की हैसियत रखती थीं। जिस तरह एक माँ अपने दूध पिलाने वाले बच्चे को तमाम आदाब-ए-ज़िंदगी उंगली पकड़ कर सिखाती है ऐन इसी तरह हज़रत आपा जान ने प्रत्येक पहलू से, प्रत्येक लम्हा हमारी तालीम-ओ-तर्बीयत का ख़्याल रखा जिसके लिए हम और हमारी नसलें हमेशा आपकी ममनून रहेंगी।

तो बेशुमार ख़त हैं जो मुझे कादियान की ख़वातीन के भी आए हैं और उन सब ख़वातीन की तरफ़ से भी आए हैं जिनसे उनका किसी भी तरह वास्ता पड़ा। इसी तरह कादियान के पुराने रहने वालों की मर्द औलादों ने भी लिखा है कि उन्होंने हमें एक माँ की तरह पाला है। ख़िलाफ़त से ताल्लुक़ का उनके बच्चों ने भी वर्णन किया जैसा कि मैंने वर्णन किया है और दूसरी ख़वातीन ने भी इस का

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.akhbarbadr.in

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2023-2025 Vol. 08 Thursday 23 November 2023 Issue No. 42-47

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com
www.alislam.org/badr

वर्णन किया है।

विनम्रता और कामिल वफ़ा का जिस तरह उन्होंने ख़लीफ़-तुल-मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हु से इज़हार किया था वह ताल्लुक़ जारी रहा और मुझ से भी वही ताल्लुक़ क़ायम रहा। यह एक मिसाल है। यहां भी मुझे मिलें तो इंतेहाई अदब और एहतेराम से। 2005 ई. मैं कादियान गया हूँ तो फ़िक्र के साथ मेहमान-नवाज़ी की कोशिश की। फिर प्रत्येक मुलाक़ात पर ख़ुश होतीं जो चेहरे पर अयाँ होती थी। 2005 ई. में बावजूद तबीयत की ख़राबी के कादियान से वापसी के सफ़र पर दिल्ली तक आएं। अल्लाह तआला उनके दर्जात बुलंद फ़रमाए और उनकी औलाद को भी उनकी नेकियां जारी रखने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। कादियान के लोगों को जिस मुहब्बत से उन्होंने रखा है अल्लाह तआला उन्हें तौफ़ीक़ दे कि वह आपस में भी इसी मुहब्बत से रहें।

अब ख़ानदान-ए-हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का बराह-ए-रस्त ख़ूनी ताल्लुक़ का रिश्ते वाला तो वहां कोई भी मौजूद नहीं है, अल्लाह तआला करे कि वहां ऐसे हालात हो जाएं कि वहां कोई जा सके। अल्लाह तआला मरहूमा के दर्जात बुलंद करे एक जनाज़ा हाज़िर है। (आगया है नाँ जनाज़ा?) जो मुहम्मद अरशद अहमदी साहिब यू.के का है। ये पिछले दिनों इकहत्तर वर्ष की उम्र में वफ़ात पा गए थे इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन।

यूसुफ़ अहमदी साहिब के बेटे थे। नैरुबी में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की उन्होंने बैअत की थी। उनके बेटे थे या पोते थे? बहरहाल यूसुफ़ अहमदी साहिब ने 1935 में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत की, उनकी नसल से हैं। अरशद अहमदी पंद्रह वर्ष की उम्र में नैरुबी से यू.के आए। उनकी शादी अमतुल कुद्दूस साहिबा से हुई जो हज़रत ख़लीफ़ा सलाहुद्दीन साहिब की पुत्री और हज़रत डाक्टर ख़लीफ़ा रशीदुद्दीन साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु सहाबी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की पोती हैं। अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से मरहूम मूसी थे। पत्नी के इलावा दो बेटे और एक पुत्री शामिल हैं। जमाअत से बड़ा पुख़्ता ताल्लुक़ था। जहां भी रहे मुख़्तलिफ़ हैसियत से जमात की ख़िदमत अंजाम देते रहे। ख़ुद्दामुल अहमदिया में भी मुहतमिम की हैसियत से काम करते रहे। बीस वर्ष से ज़ायद अरसा तक जमाअत बर्तानिया के नैशनल सैक्रेटरी इशाअत के तौर पर ख़िदमत की तौफ़ीक़ पाई। इलमदोस्त इन्सान थे। जब सलमान रुशदी ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की शान में गुस्ताख़ाना किताब लिखी तो हज़रत ख़लीफ़-तुल-मसीह अल् राबे रहमहुल्लाह तआला के इरशाद पर और हिदायात की रोशनी में इस की तरदीद के लिए एक किताब लिखने की तौफ़ीक़ पाई। नमाज़ बाजमाअत की पाबंदी करने वाले, जब से हम यहां शिफ़्ट हुए हैं तो अपनी रिहायश भी इस्लामाबाद के क़रीब इस ग़रज़ से ले ली थी कि यहां आ के नमाज़ें पढ़ते रहेंगे। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से इशक़ का ताल्लुक़ था। क़ुरआन-ए-करीम की बाक़ायदगी से तिलावत करने वाले। मरहूम को तब्लीग़ का भी शौक़ था। इसी तरह चंदाजात में बाक़ायदा थे। लोगों से प्यार और मुहब्बत से मिलने वाले ख़ुशगुफ़तार और ख़िलाफ़त के साथ अक़ीदत का गहरा ताल्लुक़ रखने वाले मुख़लिस इन्सान थे। हज़रत ख़लीफ़-तुल-मसीह अल् राबे रहमहुल्लाह तआला ने एक मर्तबा उनके बारे में फ़रमाया : अरशद अहमदी साहिब को हमेशा मैंने इतना फ़रमांबर्दार पाया कि इस की बहुत ही कम मिसाल मिलती होगी। जो भी मैंने उनको कहा फ़ौरन मान गए और इस पहलू से उनकी और उनकी वजह से सारे ख़ानदान की मेरे दिल में बहुत क़दर है। और हक़ीक़त में ख़िलाफ़त के साथ यह फ़रमांबर्दारी और इताअत आगे भी क़ायम रही। मैंने भी उन्हें आजिज़ और ख़िलाफ़त का वफ़ादार देखा है। जमाअती वक़ार और इज़्ज़त को उन्होंने हमेशा प्राथमिकता दी। अल्लाह तआला उनसे रहम और मग़फ़िरत का सुलूक फ़रमाए और उनकी औलाद में भी उनकी नेकियां जारी रखे। उनके एक बेटे वाक़िफ़-ए-ज़िंदगी भी हैं।

एक जनाज़ा ग़ायब है जो अहमद जमाल साहिब अफ़्रीकन अमरीकन का है। अमरीका में रहते थे। पिछले दिनों बानवे वर्ष की उम्र में उनकी वफ़ात हुई है। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन।

यह 1930 ई. में पैदा हुए। 1951 ई. में हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु के हाथ पर बैअत की। 1950 ओर 1960 की दहाईयों में मरहूम को मस्जिद सादिक़ शिकागो के लिए माली क़ुर्बानी की तौफ़ीक़ मिली। बहुत आजिज़ और विनम्र स्वभाव शख़्सियत के हामिल थे। जमाअत और ख़िलाफ़त के साथ बहुत इशक़ और वफ़ा का ताल्लुक़ था। एम.टी. ए देखने के लिए पहले अपने घर पर डिश एंटीना और इसके बाद ऑनलाइन इंतेज़ाम किया हुआ था। मेरे ख़ुतबात बड़े एहतेमाम के साथ बाक़ायदा सुनते थे। अपने मिलने वालों से ख़ुतबा के हवाले से फिर गुफ़्तगु भी किया करते थे। केवल सुन नहीं लिया बल्कि नोटिस ले के गुफ़्तगु भी करते थे। मरहूम मस्जिद से नो्वे 90 मील की मुसाफ़त पर रहते थे फिर भी अपनी उम्र और कमज़ोर सेहत के बावजूद बाक़ायदगी से नमाज़-ए-जुमा पर आते रहे। चंदाजात की अदायगी बाक़ायदगी से करते। कभी उन्हें याददेहानी नहीं करवानी पड़ी। दीगर माली तहरीकात में भी बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेते थे। एक पुत्री है उनकी लेकिन वह जमाअत से मुंसलिक नहीं है। अल्लाह तआला उनसे मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए और उनकी दुआएं अपनी पुत्री के लिए भी क़बूल हो जाएं और इस को भी तौफ़ीक़ मिल जाए कि अहमदीयत क़बूल कर ले। तो अभी एक तो जनाज़ा हाज़िर है और ये दो ग़ायब जनाज़े हैं। जुमे के बाद में ये जनाज़ा पढ़ाऊंगा।

★ ★ ★

128वां जलसा सालाना क़ादियान

29, 30, और 31 दिसम्बर 2023 ई. के आयोजित होगा

सय्यदना हज़रत हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने 128वें जलसा सालाना क़ादियान के लिए 29,30,31 दिसंबर 2023 ई. (दिन शुक्रवार, शनिवार और रविवार) की तिथियों की मंज़ूरी प्रदान की है। जमाअत के लोग अभी से दुआओं के साथ इस मुबारक जलसे में शामिल होने की नियत करके तैयार आरंभ करदें। अल्लाह तआला हम सबको इस अल्लाह की खातिर आयोजित होने वाले इस जलसे से लाभान्वित होने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और सईद रूहों के लिए हिदायत का माध्यम बनाए। इस जलसे के हर प्रकार से सफ़ल होने के लिए दुआएं करते रहें। आमीन।

(नाज़िर इस्लाह वा इरशाद क़ादियान)

★ ★ ★

Tahir Ahmad Zaheer
M.Sc. (Chemistry) B.Ed.
DIRECTOR
Tahir Ahmad Zaheer
Director oxford N.T.T.College
Jaipur (Rajasthan)
TEACHER TRAINING
OXFORD N.T.T. COLLEGE
(Teacher Training)
(A unit of Oxford Group of Education)
Affialiated by A.I.I.C.C.E. New Delhi 110001
0141-2615111- 7357615111
oxfordnttcollege@gmail.com
Add. Fateh Tiba Adarsh Nagar, Jaipur-04
Reg. No. AIICCE-0289/Raj.

HUSSAIN CONSTRUCTIONS & REAL ESTATE
(SINCE 1964)
कादियान में घर, फ्लैट्स और बिल्डिंग उचित कीमत पर निर्माण करवाने के लिए सम्पर्क करें, इसी प्रकार कादियान में उचित कीमत पर बने बनाए नए और पुराने घर / फ्लैट्स और ज़मीन ख़रीदने और Renovation के लिए सम्पर्क करें
(PROP: TAHIR AHMAD ASIF)
contact no. : 87279-41071, 83603-14884, 75298-44681
e mail : hussainconstructionsqadian@gmail.com
HUSSAIN CONSTRUCTIONS & REAL ESTATE

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad